Every Fortnight February I 2014

मूल्य • दस रुपए

बालहंस

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

• गरनिस के फूल • तया कहना फूलों का
• रजत पुष्प • हलाई मिठाई

वर्ष- 28 अंक- 14
1-15 फरवरी, 2014 पृष्ठ- 68

होजा का पत्र

–वेणु वासिष्ठ

वर्ष- 28 अंक-14

फरवरी (प्रथम) 2014, जयपुर

कहानियां

सिंह व मैना- 5-7
गरमियों के फूल- 8-9
विदेशी पेन- 32-33

चित्रकथा

सोच-विचार कर- 15-17
किताब खेलने के लिए- 22-23
ई-मेल- 62-65

विविध

क्या कहना फूलों का- 10-11
खाने में फूल हैं ये फूल- 12
पत्थरों के बीच भी फूल- 13
सीख सुहानी- 14
शब्द मिलते ही झूम उठती है
मधुमक्खी-20
परी देश के बादल या
मलाई मिठाई- 21
कविताएं- 24-25
बालहंस न्यूज- 26-27
सैर-सपाटा- 28-29
राज्य पुष्प- 30-31
बालहंस पोस्टर- 34-35
फेंजी किया रे- 36-37
खेलें अंग्रेजी- 39
गुपशुप- 40-41
बालमंच- 48
नॉलेज बैंक- 49
सामान्य ज्ञान- 42-43
तथ्य निराले- 44-45
क्यों और कैसे/कमाल है- 46
क्रॉसवर्ड पजल्स- 47
आर्ट जंक्शन- 50-51
ठिकाना तो बताना/ आप से
मित्र/ अंतर बताओ- 52-53
किड्स क्लब- 54-55
इक्वेटर- 56-57
बूझो तो...- 61
कैसा लगा- 66

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम- 58
ज्ञान प्रतियोगिता- 59
रंग दो प्रतियोगिता- 60

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा
चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

मुख्य सलाहकार: बी.एल.सोनी
कॉपी एडिटिंग: संजीव शर्मा

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से बालहंस, जयपुर के नाम भिजवाएं।

वार्षिक- 240/-रुपए,
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005825 पर संपर्क करें।

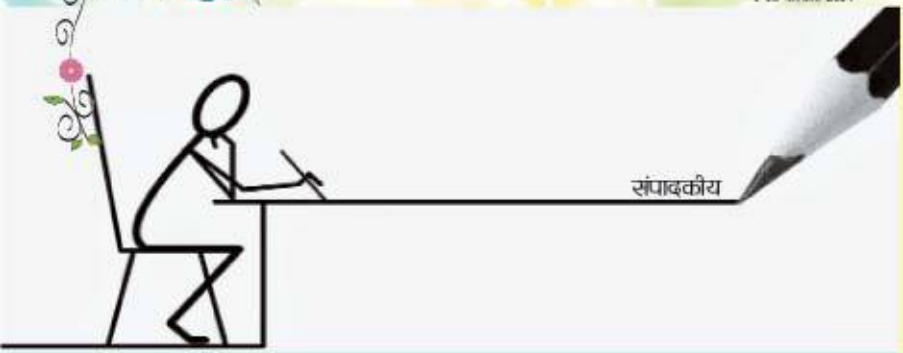

संपादकीय

दोस्तो,

वसंत आते ही सब तरह बहार छा जाती है। फूल खिलखिलाने लगते हैं। मौसम खुशनुमा हो जाता है। और जब फूल की बात चलती है तो बात मुस्कान से जुड़ जाती है। फूल हमें हमेशा मुस्कराने का संदेश देते हैं। आप कितने ही अच्छे कपड़े पहन लें, चेहरे पर खूब सौन्दर्य प्रसाधन लगा लें, लेकिन चेहरे पर मुस्कराहट नहीं तो सब बेकार है। आप बगैर मुस्कराहट के किसी को प्रभावित नहीं कर पायेंगे। यूं कहें कि मुस्कराहट से दूसरा अच्छा कोई भेष नहीं है। एक मुस्कान व्यक्तित्व को निखार देती है। न सिर्फ यह व्यक्तित्व संवारती है, बल्कि कार्य करने के जोश को दुगुना कर देती है। कई बार तो मुस्कराहट बिगड़े काम बना देती है। मुस्कान पाने वाला मालामाल हो जाता है पर देने वाला दरिद्र नहीं होता। मुस्कान थके हुए के लिए विश्राम है, उदास के लिए दिन का प्रकाश है तथा कष्ट के लिए प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है। तो दोस्तो, खिलखिलाते रहिये, मुस्कराते रहिये।

तुम्हारा बालहंस

मुस्कराहट, आपकी खूबसूरती में सुधार करने का एक सस्ता तरीका है।

सिंह व भौंरा

कहानी

'मैं ही जंगल का राजा हूं,' हर बार ऐसे बोलते समय सिंह को ऐसा लगता कि उसका गंभीर चेहरा और गंभीर हो रहा है। अपने घर में सबसे बड़े आइने के सामने खड़ा होकर सिंह प्रतिदिन कई-कई बार अपनी सुन्दरता को निहार कर प्रसन्न होता था।

परन्तु उस दिन पहली बार गौर से देख रहा था। अपनी तेज निगाहें, अपनी मजबूत काया। शे□पू कर नहाया। जैसे बाल उड़े-उड़े, घने-घने, आह...हा...। मुंह को खोला। अपने नुकीले दांत देख स्वयं पर गर्व हुआ। अपनी लाल रंग की जीभ को एक बार पूरा बाहर निकाला, फिर अपने अपने बदन को मोड़ कर देखा। बड़ी तकलीफ से मुड़कर देखा। अरे-अरे, मेरी पूंछ भी बहुत सुन्दर है।

कोई ऐसे ही ना थोड़ा मुझे जंगल के राजा की पदवी मिली? मुझसे यदि कोई गंभीर, मुझसे अधिक सुन्दर, मुझसे अधिक वीर कोई प्राणी हो सकता है □या? सिंह ने अपने ऊपर लाल रंग के अंग-वस्त्र ओढ़े। कुछ स्वर्ण-आभूषणों को पहना। सिर पर एक मुकुट को रखा। सब कुछ तैयार है। अब रवाना होना चाहिये।

सिंह ने गुफा से जोर से डांट लगाई, 'वहां कौन है? सारी तैयारी पूरी हो गई □या?' एक बन्दर कूद कर भय व भ□ित-भाव से सिर झुका कर बोला, 'हां महाराज, सब तैयार है।'

उस दिन जंगल में एक सभा का आयोजन था। सिंह राजा ही उसके अध्यक्ष थे। हर महीने एक सभा का आयोजन हो, ऐसा प्रावधान किया गया था। जंगल में जो जानवर हैं, वे सब उस दिन राजा के पास आकर कर (टै□स) देते थे। और कोई परेशानी हो तो भी उसे बता सकते थे। राजा ही उसका फैसला करता था।

सिंह बाहर आया। वहां घोड़े जुते हुये गाड़ी तैयार थी। सिंह उसमें छलांग लगा चढ़ गया।

'हां चलो,' सिंह के आदेश देते ही गाड़ी चल दी। छोटी गाड़ी के आगे बाघों का झुण्ड जायेगा। ये सब राजा की सुरक्षा के लिए हैं। राजा का वहां कोई दुश्मन नहीं है, फिर भी इस तरह के जुलूस के साथ जाना गौरव की बात है ना? आखिर सिंह राजा जो ठहरे।

आधा घण्टा चलने के बाद जंगल के बीच जगह पर सब प्राणी मिले। राजा के आने के पहले ही जितने भी जानवर थे, सब आकर गोला बना बैठ गए थे। कोई देर से आये, ये बात राजा को पसंद नहीं थी।

लाल रंग के सिंहासन पर अंग वस्त्र लटका कर सिंह बड़े गंभीर होकर आराम से बैठे हुए थे।

'हु□म, दरबार शुरू करो,' सिंह गरजा। सबसे पहले आदर देने का काम शुरू हुआ। एक-एक कर जानवर राजा के सामने आते व प्रणाम करके कर (टै□स) देते। कर जो है, वह अनाज हो सकता है, या फल,

पृष्ठ संख्या 8 पर जारी...

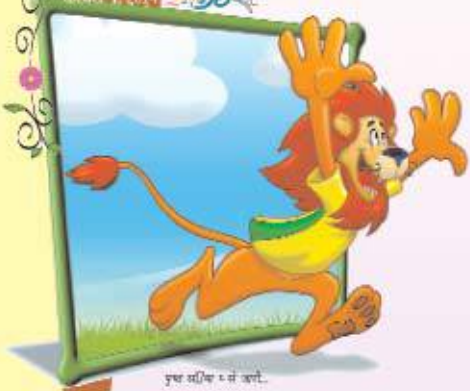

पृष्ठ संख्या 5 से जारी...

भालू ही इसका हिसाब-किताब रखने वाला अधिकारी है। हर एक जानवर राजा को प्रणाम कर जो सामान लाए हैं, वे उसे भालू को सौंपते, फिर जाते समय राजा को प्रणाम कर जाते।

ये जानवर राजा से डरते थे। पर उनके मन में राजा के प्रति प्रेम या सम्मान नहीं था। इसका कारण राजा का हठी स्वभाव ही था। कर लेने में तो राजा ध्यान रखता, पर कोई भी समस्या या लड़ाई-झगड़े का फैसला करने में ज्यादा रुचि नहीं रखता। जंगल में कोई समस्या हो, या खाने की कमी हो जाये तो उसमें कभी बीच में नहीं बोलेंगे। पर उन्हें किसी ने इज्जत न दी तो गरजना शुरू कर देंगे।

सबसे पहले ऊंट महाशय आए। राजा को प्रणाम किया। फिर सामान के बोरे को भालू के पास जमा करवाया और राजा को प्रणाम कर सरकने लगा।

इतने में सिंह गरजा, 'इधर आओ।' ऊंट घबराया-सा आगे आया।

सिंह गरजा, 'तुम्हें प्रणाम करने का तरीका नहीं मालूम? अच्छी तरह सिर झुका कर मुझे प्रणाम करो।' ऊंट परेशान हुआ और बोला, 'राजा, मेरी गर्दन बहुत ही लम्बी है। मैं बहुत ज्यादा अपने सिर को झुका नहीं सकता।'

'तुम्हें कितना घमण्ड है जो तुम ऐसा कह रहे हो। मेरा कहा माना करो, नहीं तो तुम्हें जंगल से भगा दूंगा।' दूसरा कोई रास्ता न देख बहुत तकलीफ से सिर को मोड़ा तो उसकी गर्दन दुखने लगी। फिर भी ऊंट ने सिंह को जैसे-तैसे प्रणाम किया।

अब बारी हाथी की थी। हाथी का भी वही हाल था। हाथी ने अपने बड़े शरीर को झुका कर, पहले दो पैरों को मोड़ कर बड़ी परेशानी से प्रणाम किया। पक्षी, सांप... हर एक ने अलग-अलग तरीके से प्रणाम कर, कर चुकाया। आखिर में भौंरे की बारी आयी। वह आकर खड़ा हुआ। कुछ भिनभिनाने लगा। यहां-वहां घूमा। फिर आधे रास्ते से मुड़ कर जाने लगा।

सिंह को गुस्सा आया, 'अरे। तुम यह क्या कर रहे हो?'

भौंरे ने आवाज ऊंची कर जवाब दिया, 'राजा, मैंने तरीके से आपको प्रणाम किया।'

'मैंने तुम्हें प्रणाम करते देखा नहीं, फिर एक बार प्रणाम करो।'

भौंरा थोड़ा इधर, थोड़ा उधर घूमा। बस इतना ही...।

सिंह के गरजने से पूरा जंगल कांप उठा,

'राजा मैं तो छोटा-सा कीड़ा हूं। इसलिये मेरा प्रणाम करना आपको दिखाई नहीं देता, ऐसा मैं सोचता हूं। आपको शंका हो तो थोड़ा नीचे आकर देखियेगा...।'

'ठीक है,' कह कर सिंह नीचे आया।

'कुछ और झुक कर देखो राजा जी,' भौंरा बोला।

सिंह अच्छी तरह से झुक गया। फिर भी उस समय भौंरे के सिर व पैर को वो देख नहीं पाया।

'ओ बेवकूफ, मैं देख सकूं ऐसा प्रणाम कर।'

भौंरा बोला, 'सिर जमीन को छू रहा है आपको पता नहीं लग रहा है? मेरे हाथ आपके लिये जुड़ गये, आपको नहीं दिख रहा? अपने मुकुट को उतार कर कृपया अपने सिर को भूमि में रखकर देखियेगा।'

राजा ने अपने मुकुट को उतार कर नीचे जमीन पर रखा। जमीन पर बैठकर घूर कर देखा। अब भी ठीक से पता नहीं चला। गुस्से में वह एक बार फिर गरजा।

भौंरे ने बड़ी नम्रता से कहा, 'मुझे क्षमा करो राजा। आप सिर को और झुका कर देखो तो ही मुझे अच्छी तरह देख सकते हो।'

सिंह अपने दोनों आगे के पैरों को मोड़कर अपने सिर को झुकाने की कोशिश करने लगा। इतने में उसका पैर उलझ गया। वह एकदम से उलट कर गिर गया। उसका लाल अंग वस्त्र धूल में गिर कर गन्दा हो गया। शरीर में जहां-तहां मिट्टी हो गई। सिंह का यह हाल देखकर जंगल के जानवर जोर से हंसने लगे। सिंह अपमानित हुआ। अपने गुस्से को किस पर दिखाए उसे समझ नहीं आया।

भौंरा आराम से बोला, 'राजा साहेब, एक बार और प्रणाम करूं □या?'

सबकी हंसी से पूरा जंगल ही हिल गया। इस घटना के दूसरे दिन, सिंह ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। उसके अगले ह□ते वहां मतदान हुआ। जो जीता वह और कोई नहीं, भौंरा ही था।

–एस. भाग्यश्री शर्मा

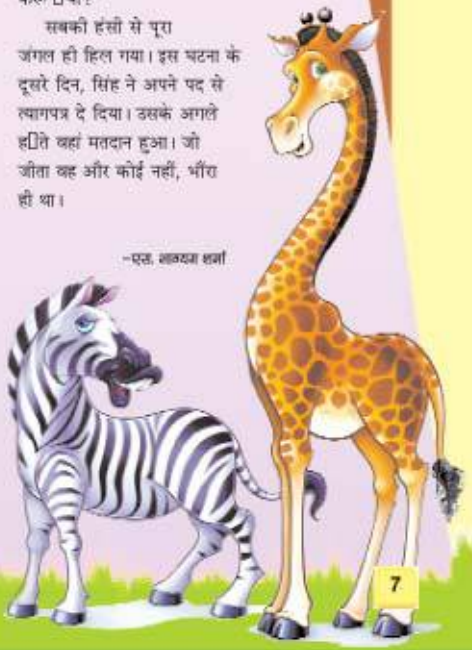

नरगिस के फूल

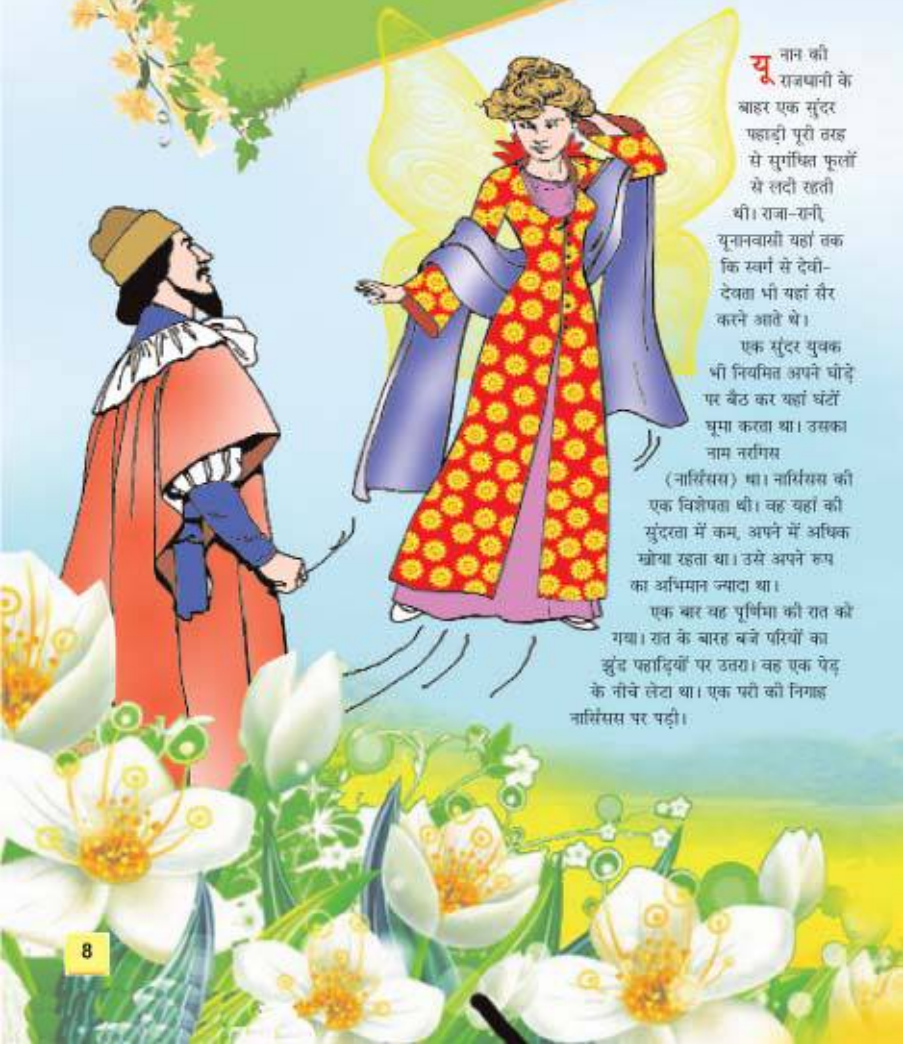

यूनान की राजधानी के बाहर एक सुंदर पहाड़ी पूरी तरह से सुगंधित फूलों से लदी रहती थी। राजा-रानी, यूनानवासी यहां तक कि स्वर्ग से देवी-देवता भी यहां सैर करने आते थे।

एक सुंदर युवक भी नियमित अपने घोड़े पर बैठ कर यहां घंटों घूमा करता था। उसका नाम नरगिस (नार्सिसस) था। नार्सिसस की एक विशेषता थी। वह यहां की सुंदरता में कम, अपने में अधिक खोया रहता था। उसे अपने रूप का अभिमान ज्यादा था।

एक बार वह पूर्णिमा की रात को गया। रात के बारह बजे परियों का झुंड पहाड़ियों पर उतरा। वह एक पेड़ के नीचे लेटा था। एक परी की निगाह नार्सिसस पर पड़ी।

कहानी

उसने इतना सुंदर पुरुष देवलोक में भी नहीं देखा था। वह उस पर मोहित हो गई। दूसरी परियां नाच-गाने में लगी रहीं। चुपके से वह नार्सिसस के पास पहुंच गई। उसने गुलाब का फूल फेंककर अपनी ओर आकर्षित किया।

अपने में खोये नार्सिसस ने पलटकर देखा। एक परी को देखकर अचंभित हो गया। परी ने मुस्करा कर कहा, 'हे सुंदर युवक! मेरा नाम एको परी है। मैं स्वर्ग से रोज आती हूं।' नार्सिसस ने अपना परिचय दिया, 'मैं नार्सिसस हूं। मैं भी रोज यहां आता हूं। मुझे यह जगह बहुत पसंद है।'

'तुम अकेले ही आते हो, तुम्हारे साथ कोई नहीं है?'

'मैं अकेला ही आता हूं, तुम किसके साथ आती हो?' 'मेरी सहेलियां स्वर्ग से आती हैं। रातभर आनंद मनाकर वापस स्वर्ग चली जाती हैं।'

इस तरह बातें करते-करते रात बीत चली। एको ने कल फिर आने का वादा किया और चली गयी। नार्सिसस को दिनभर अच्छा नहीं लगा। लेकिन अपने रूप को निहारने की आदत के कारण उसे ख़ास कष्ट नहीं हुआ। शाम होते ही वह उसी पेड़ के नीचे जाकर लेट गया। ऐसी ही रोज मुलाकातें होने लगीं। दोनों में प्रेम हो गया। लेकिन युवक नार्सिसस अपने सौंदर्य में ही खोया रहता। परी के रूप और प्रेम की ज्यादा प्रशंसा और परवाह नहीं करता। लेकिन परी तो उसके प्रेम में डूबती जा रही थी। उसने स्वर्ग के नियम की परवाह नहीं की। परियों की रानी ने उसे निष्कासन का भय भी बताया, पर वह डिगी नहीं। रानी ने कहा, 'यदि पौ फटने से पहले नहीं आयी, तो तुम मर कर ध्वनि बनकर वहीं भटकती रहोगी।'

एको ने परवाह नहीं की और धरती की ओर चल पड़ी। उस रात एको ने नार्सिसस से कहा, 'कल रात तुम जरूर आना, मैं तुम्हारे साथ ही रहना चाहती हूं। सुबह तुम्हारे साथ शहर चलूंगी।'

नार्सिसस ने हां कहा और पौ फटने के पहले ही दोनों अपने-अपने रास्ते चल दिये। उसके अरमान रह-रहकर हिलोर लेने लगे। एक पल वह परी से मिलने व दूसरे ही पल अपने रूप में डूब जाता। उस दिन मौसम अचानक बदल गया। दोपहर से ही बादल उमड़-घुमड़कर बरसने लगे। घना अंधेरा छा गया। कब रात हो गई पता नहीं चला। बरसते पानी में ही उसने अपना घोड़ा निकाला और परी से मिलने चल पड़ा। वर्षा की बूंदें उसे गुदगुदा रही थी। वह बार-बार अपने शरीर को बिजली के प्रकाश में देखता। रास्ते में नदी-नालों में भारी बाढ़ आ गयी। वह किनारे ही खड़ा रहा।

अचानक बादल साफ हो गए। पूनम का चांद आकाश पर टंग गया। उसने चांदनी में अपने रूप को खिलते हुए महसूस किया। बाढ़ का पानी उतर गया। वह एक पोखर में लगातार अपने छवि देखता रहा। उसे अपने में से निकलने की सुध भी नहीं रही।

उधर एको का बुरा हाल था। वह पेड़ के नीचे खड़े-खड़े थक गई। बारिश में भीगने से उसकी तबीयत खराब हो गई। नार्सिसस के नहीं आने से तो उसकी दशा बहुत खराब हो गई। पौ फटने में कुछ ही देर थी। उसने अपने कोमल और कांपते स्वर में नार्सिसस को आवाज लगाना शुरू किया। उसे डर था कि रानी के शाप से वह कहीं की नहीं रहेगी। उसकी आवाज ही पहाड़ों से टकराकर लौट आती, लेकिन जवाब नहीं आता।

आखिर पौ फट गई। रानी के शाप से एको को शरीर त्यागना पड़ा और वह ध्वनि में बदल गई। नार्सिसस पोखर के किनारे ही बैठा रहा। उसे अपने स्वप्रेम का बहुत दुख हुआ और अपनी छवि को देखते हुए स्थिर हो गया। ईश्वर से देखा नहीं गया। उसे नरगिस का फूल बना दिया। नरगिस का फूल आज भी झुका अपने को ही निहारता है। एको सर्वत्र व्याप्त होकर नार्सिसस या नरगिसी युवक को पुकार रही है।

–आशा 'अपूर्व'

क्या कहना फूलों का

पता है दोस्तो, एक समय ऐसा भी था जब धरती पर फूल नहीं थे। फिर ऐसे पेड़ों का जन्म हुआ जिनमें काठ के फल और बीज बने। चीड़, देवदार उन्हीं के वंशज हैं। लेकिन तेरह-चौदह करोड़ वर्ष पहले ऐसे पेड़-पौधों का जन्म हुआ जिनमें फूल खिल उठे। फूल खिले और चारों ओर रंगों की बहार छा गई।

वैज्ञानिकों का कहना है कि हमारी धरती पर पेड़-पौधों की 3 लाख 70 हजार से भी अधिक जातियां हैं। उनमें 2 लाख 70 हजार से भी अधिक जातियां फूलदार पौधों की हैं। उनमें साल भर में खिल कर सूख जाने वाले पौधे हैं तो सालों-साल खिलते रहने वाले पेड़-पौधे भी हैं। सुंदर लताएं भी हैं और झाड़ियां भी। दिन में फूलों के चटख रंगों से मन मोहने वाले पेड़-पौधे भी हैं तो रात में भीनी-भीनी खुशबू बिखेरने वाले पेड़-पौधे भी। सच पूछो तो फूलों ने अपने मनमोहक रंगों से हमारे जीवन में खुशियों के रंग भर दिए। सुंदर फूल देख कर हमारा मन भी खिल उठता है।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में फूलों का खूब वर्णन किया गया है। रामायण और महाभारत में पलाश, चंपा, अमलतास जैसे फूलदार पेड़ों का उल्लेख किया गया है। कमल के फूल तो कविताओं में जाने कब से खिलते आ रहे हैं। महाकवि कालिदास के ग्रंथ तो फूलों के वर्णन से भरे पड़े हैं। उन्होंने कमल, कचनार, पलाश, पारिजात और माधवी लता जैसे न जाने कितने रंग-बिरंगे, भीनी सुगंध बिखेरते लता-गुल्मों का वर्णन किया है।

फूलों ने मानव का इतना मन मोहा कि उसने इनके सुंदर चित्र बनाए। अपने भित्तिचित्रों में उकेरा। कपड़ों में काढ़ा और बुनाइयों में बुना। बेलबूटों से चीजें सजाईं। फूलों की सौगात दी, फूलमालाएं पहनाईं, फूलमालाओं से घर सजाया। पंखुड़ियों की अल्पनाएं बनाईं। फूलों का इत्र बना कर सुगंध फैलाई। फूलों से शुभकामनाएं दीं, पंखुड़ियां बिखेर कर स्वागत की रस्म निभाई। अपने घर-आंगन को फूलों से सजाया, फूलों से महकाया। हमारी पूरी संस्कृति फूलों में रची-बसी है।

हमारे देश में फूलों की खेती को मुगल सम्राटों ने बहुत बढ़ावा दिया। बाबर ने न केवल हमारे देश के फूलों को गले लगाया, बल्कि वह फारस और मध्य एशिया से भी एक से एक नायाब फूल लाया। सन् 1526 के आसपास वही गुलाब के पौधे हमारे देश में लाया।

बादशाह अकबर भी बाग-बगीचों और फूलों का बड़ा शौकीन था। अबुल-फजल ने 'आइने-अकबरी' में 21 सुगंधित फूलदार पौधों के फूलों के रंगों और खिलने के मौसम के बारे में बताया है। जहांगीर तो प्रकृति प्रेमी था ही। उसे मारवा के सुगंधित फूल बहुत पसंद थे। नूरजहां और जहांगीर को गुलाब बहुत अच्छे लगते थे। यह आज से लगभग 400 साल पुरानी बात है।

गुलाब, नरगिस, आइरिस, कार्नेशन, लिली, डेफोडिल, ट्यूलिप आदि फूल मुगल बादशाह हमारे देश में लाए। उसके बाद जब पुर्तगाली और अंग्रेज आए तो वे भी हमारे देश में विदेशी पौधे लाए। हमारे देश से अनेक सुंदर फूलदार पेड़-पौधों को विदेश ले गए। अंग्रेज वनस्पति विज्ञानियों ने तो नए फूलों और दूसरे पेड़-पौधों की तलाश में देश का चप्पा-चप्पा छान डाला। उन्हें नए-नए सुंदर फूल मिले।

हमारे देश के बाग-बगीचों और घर-आंगन की फुलवारियों में भी एक से एक सुंदर फूलों की जातियां उगाई जा रही हैं। वसंत आता है और हजारों रंग-बिरंगे फूल खिलखिला उठते हैं। न जाने कहां-कहां से सुंदर तितलियां और भौंरे आकर पराग और मकरंद बटोरने लगते हैं।

दोस्तो, हमें फूलों को बचाए रखना चाहिए। तभी तो तुम्हारी ही तरह कल आने वाले फूलों के बच्चे देख सकेंगे कि हमारी इस धरती में कैसे-कैसे सुंदर फूल हैं।

–देवेंद्र

पाश्चात्य संस्कृति में कई फूलों के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। फूलों को अर्थ से जोड़ने की प्रथा को फ्लोरोग्राफी कहते हैं।

- सजावटी उद्देश्य के लिए फूल प्रेरित करते हैं।
- लाल गुलाब प्रेम, सौंदर्य और चाहत के प्रतीक के रूप में किया जाता है।
- खसखस मृत्यु के समय सांत्वना का प्रतीक है। यूके, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में लाल खसखस युद्ध के दौरान मारे गए सैनिकों की श्रद्धांजलि में पहना जाता है।
- लिली का उपयोग दफनाने के समय जीवन के पुनरुत्थान के रूप में किया जाता है। यह सितारों (सूरज) से भी जोड़ कर देखे जाते हैं।
- डेज़ी के फूल मासूमियत के प्रतीक हैं।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में फूलों का खूब वर्णन किया गया है। रामायण और महाभारत में प्रलाश, चंपा, अमलताश जैसे फूलदार पेड़ों का उल्लेख किया गया है। कमल के फूल तो कविताओं में जाने कब से खिलते आ रहे हैं।

कमल

कमल का तना ज्यादातर ऐशियन कंट्री में खाया जाता है। इसका फूल चाय बनाने के लिये भी प्रयुक्त होता है। इसमें कई विटामिन होते हैं।

गुलाब

गुलाब के फूलों की पत्तियों से कई खाने-पीने की चीजें बनती हैं। विशेषकर गुलकंद। गुलाबजल को भी अलग-अलग तरह से इस्तेमाल किया जाता है।

कॉर्नफ्लोवर

सलाद को सजाने के लिये इसे काम में लिया जाता है।

स्क्वैश ब्लॉसम

इसे खासतौर पर इटेलियन और मैक्सिकन कुजीन में प्रयोग किया जाता है। इससे पास्ता और सूप बनाया जाता है। इस फूल में विटामिन सी और पोटेशियम होता है।

गुड़हल

इस फूल का असर सबसे ज्यादा बालों पर देखा गया है। लेकिन इसे हर्बल टी के लिये भी प्रयोग में लाया जा सकता है। साथ ही विटामिन सी और मिनरल इसमें उच्च मात्रा में पाये जाते हैं।

केसर

दुनिया का सबसे महंगा मसाला केसर, खाने को महकाने व कलर करने के लिये यूज किया जाता है। इसके साथ चिकन करी, सूप, मिठाई में भी प्रयोग होता है। साथ ही यह पेट की खराबी को भी दूर करता है।

बैंगनी

यह सलाद को सजाने के लिये यूज होता है। यह स्वाद में मीठा होता है इसलिये इसे डेजर्ट, चाय और फलों के सलाद में भी इस्तेमाल किया जाता है। इसमें विटामिन ए और सी भी होता है।

रोजमेरी

इसे खाने की गार्निशिंग के लिये प्रयोग किया जाता है, क्योंकि यह उसमें जड़ी-बूटी का स्वाद पैदा करता है। इसमें विटामिन बी, ए, सी और आइरन पाया जाता है।

गुलनार

मिठास पैदा करने वाला यह फूल कैंडी, केक और वाइन बनाने के लिये यूज होता है।

चमेली

चाय और मिठाई में स्वाद बढ़ाने के लिये इसका प्रयोग होता है।

सूरजमुखी

इसका तेल हर घर में प्रयोग होता है। पर इसकी पत्तियां, तना और कली तरह-तरह की डिश बनाने के लिये उपयोग होती हैं। इस फूल में विटामिन और मिनरल होते हैं।

पत्थरों के बीच भी खिलते हैं फूल

दोस्तो! अक्सर हम फूलों को लोग नाजुक और कमजोर समझते हैं। जबकि हम नरम, नाजुक और कोमल जरूर होते हैं, लेकिन कमजोर कतई नहीं होते। कमजोर होते तो हिमालय की पर्वत शृंखला में बर्फीले तूफानों, कड़ी धूप और कठोर चट्टानों के बीच टिकते क्या? आप में से बहुत से दोस्त नहीं जानते होंगे कि हिमालय के आंचल में रंग-बिरंगे फूलों वाले करीब 3800-4000 तरह के पेड़-पौधे पाये जाते हैं। कुछ अपनी खुशबू से वहां का वातावरण महकाते हैं, कुछ अपने अलबेले-अनूठे रंगों से फिजां को रंगीन बनाते हैं। तो कई प्रजातियां अपने औषधीय गुणों के लिए भी जानी जाती हैं।

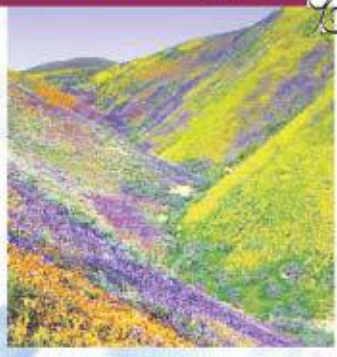

हिमालय के अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न प्रकार की वनस्पतियां, घासें, बेलें और फूलदार पेड़-पौधे उगते हैं।

नीले रंग के किरात फूल (जेन्टियन) अपने पौधे से आठ गुना बड़े होते हैं। गमले जैसी डिजाइन वाले इन फूलों की खासियत यह है कि वर्षा की पहली बूंद इन पर पड़ते ही ये कसकर बंद हो जाते हैं, ताकि इनमें पानी भरकर ये टूट न जाएं। फिर जैसे ही इन पर धूप पड़ती है, ये फिर से खिल उठते हैं।

पीड़ानाशक गुलमेंहदी के फूल भी यहां बहुतायत से पाये जाते हैं। इनमें फल पकते ही फली इतनी जोर से फूटती है कि करीब आठ फीट की दूरी तक इसके बीज बिखर जाते हैं। इस तरह ये चारों ओर फैल जाते हैं।

बुरांश के फूल तो इतने सुंदर होते हैं कि उ□ाराखंड और सिक्किम की राज्य सरकारों ने इसके वृक्ष को अपना राजकीय वृक्ष होने का स□मान दिया है। जबकि नागालैंड और हिमाचल सरकार ने बुरांश के फूलों को अपना राजकीय फूल घोषित कर रखा है।

हिमालय की पर्वत शृंखला के सबसे खूबसूरत पौधों में □लू पॉपी (गुल-ए-नीलम) शामिल है। इसमें से निकली कांटेदार रचना जानवरों से इसकी रक्षा करती है।

पहाड़ों की ऊंचाईयों पर नरम घास के 'बुग्याल' होते हैं। यहां मुलायम घास के अलावा कई प्रकार के रंग-बिरंगे फूल उगते हैं।

वसंत ऋतु के आगमन के साथ ही यहां प्रकृति की छटा बनकर हम रंग-बिरंगे फूल इधर-उधर झूमने लगते हैं।

दोस्तो! आपने कई परी-कथाओं, कहानियों और लेखों में फूलों की घाटी का जिक्र जरूर सुना होगा। फूलों की यह जग प्रसिद्ध घाटी हिमालय क्षेत्र के गढ़वाल में हैं। यहां फूलों की सैकड़ों प्रजातियां मौजूद हैं। देखने में यह जगह स्वर्ग जैसी लगती है। कहते हैं, देवता भी आ जाएं, तो उनका मन यहां रम जाएगा।

यहां कोबरा, लिली, ब्रह्मकमल और पोस्कार जैसे अनूठे और दुर्लभ फूल भी बहुतायत में पाए

संगठन में ही शक्ति

एक गुरु के दो शिष्य हमेशा लड़ते रहते थे। वे हमेशा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते। एक दिन गुरु ने उन्हें बुलाया और एक कथा सुनाई, 'एक बार जंगल में भैंस और घोड़े में लड़ाई हो गई। भैंस ने सींग मार-मारकर घोड़े को अधमरा कर दिया। घोड़े ने जब देख लिया कि वह भैंस से जीत नहीं सकता, तब वह वहां से भागा और मनुष्य के पास पहुंचा।

घोड़े ने उससे अपनी सहायता की प्रार्थना की। मनुष्य ने कहा, 'भैंस के बड़े-बड़े सींग हैं, वह बहुत बलवान है। मैं उससे कैसे जीत सकूंगा? घोड़े ने समझाया, 'मेरी पीठ पर बैठ जाओ, एक मोटा डंडा ले लो। मैं जल्दी-जल्दी दौड़ता रहूंगा। तुम डंडे से मार-मारकर भैंस को अधमरी कर देना और फिर रस्सी से बांध देना।' मनुष्य ने कहा, 'मैं उसे बांधकर भला क्या करूंगा? घोड़े ने बताया, 'भैंस बड़ा नीचा बूध देती है। तुम उसे पी लिया करना। मनुष्य ने घोड़े की बात मान ली। बेचारी भैंस जब पिटते-पिटते गिर पड़ी, तब मनुष्य ने उसे बांध लिया। घोड़े ने काम समाप्त होने पर कहा, 'अब मुझे छोड़ दो मैं घरने जाऊंगा।' मनुष्य जोर-जोर से हंसने लगा।

उसने कहा, 'मैं तुमको भी बांध देता हूं। मैं नहीं जानता था कि तुम मेरे चढ़ने के काम आ सकते हो। मैं भैंस का बूध पीऊंगा और तुम्हारे ऊपर चढ़कर घूमा करूंगा।' घोड़ा बहुत रोया और पछताया। पर अब क्या हो सकता था।

कथा समाप्त कर गुरु बोले, 'तुम दोनों अगर एक-दूसरे के खिलाफ षड्यंत्र करोगे तो कोई तीसरा आकर उसका लाभ उठा लेगा। जैसा घोड़े ने भैंस के साथ किया, वैसा ही फल उसे खुद भोगना पड़ा। दोनों शिष्यों ने उस दिन से लड़ना बंद कर दिया।

सीख- जो दूसरे का अहित करता है, उसका अहित पहले होता है।

सीख सुहानी

सूई को मिला सम्मान

किसी गांव में एक दर्जी रहता था। वह दिनभर अपने काम में लगा रहता। उसी बीच समय निकालकर ईश्वरोपासना भी करता था। वह प्रायः कहीं जाता नहीं था। लोग ही उसके पास आते। कई बार वह लोगों की बड़ी-बड़ी से समस्याएं चुटकियों में सुलझा देता था। गांव के लोग कहते कि उसका स्वभाव फकीर जैसा है।

उसका एक बेटा भी था, जो गांव की पाठशाला में पढ़ता था। एक दिन वह पाठशाला से जल्दी लौट आया। आकर वह अपने पिता के पास बैठ गया। वह बड़े ध्यान से अपने पिता को काम करते हुए देखने लगा। उसने देखा कि उसके पिता कैंची से कपड़े को काटते हैं और कैंची को पैर के पास टांग से दबा कर रख देते हैं। फिर सूई से उसको सिलते हैं और सिलने के बाद सूई को अपनी टोपी पर लगा लेते हैं।

जब उसने इसी क्रिया को चार-पांच बार देखा तो उससे रहा नहीं गया और उसने अपने पिता से कहा कि वह उनसे एक बात पूछना चाहता है। दर्जी ने कहा, 'बोलो, क्या पूछना चाहते हो? बेटा बोला, 'मैं कई देर से आपको देख रहा हूं। आप कपड़ा काटने के बाद कैंची को पैर के नीचे दबा देते हैं और सूई से कपड़ा सिलने के बाद उसे टोपी पर लगा लेते हैं। ऐसा क्यों?'

अपने बेटे के इस प्रश्न पर दर्जी मुस्कराया, फिर उसने जवाब दिया, 'बेटा, कैंची काटने का काम करती है और सूई जोड़ने का काम करती है। काटने वाले की जगह हमेशा नीचे होती है, पर जोड़ने वाले की जगह हमेशा ऊपर होती है। यही कारण है कि मैं सूई को टोपी पर लगाता हूं और कैंची को पैर के नीचे।' बेटे को इस वाक्य में जीवन का सार मिल गया।

सीख- भाईचारा बढ़ाने वाला व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है।

भीखू

सोच-विचार कर

स्क्रिप्ट- उमेश
ड्राइंग- रिंकि बुहन्ना

ऐसा क्या...? एक मेरे लिए भी लाना प्लीज़।
हा...हा...
1-15 फरवरी, 2014
इसके लिए तुम्हें कुएं वाली चट्टान के नीचे जाकर प्रार्थना करनी होगी। इसके बाद वहां से वह जादुई पत्थर मिलेगा।
आओ, तुम्हें बहुत मज़ा आएगा।
हा...! हा...! कितनी एकाग्रता से प्रार्थना कर रहा है।

1-15 फरवरी अंक-4
क्या तैयार हो गया?
बस, हो गया...!
और ये लो आ गया जादुई पत्थर!
वाह...बस आने वाला है!
आ...आ... अरे बाप रे...
तुम सही कह रहे थे। भीखू भी अब कुछ दिन तक नजर नहीं आयेगा।
सीख : सोच-विचार कर किसी पर विश्वास करो।
-सजाद

माथापच्ची

नंबर wheel

कैसे खेलें

नंबर व्हील को हल करने के लिए अपनी तर्क शक्ति का प्रयोग करें। यहां एक संख्या शृंखला दी गई है जो एक ही सिद्धांत के आधार पर क्रमबद्ध बढ़ती है। आपको उस शृंखला की लापता संख्या लिखनी है।

वर्ड web

कैसे खेलें

वर्ड वेब में उन वस्त्र वेशों के नाम ढूंढिए, जहां मुस्लिम आबादी सर्वाधिक है। नाम ऊपर से नीचे और तिरछे भी हो सकते हैं।

नंबर pyramid

कैसे खेलें

नंबर पिरामिड बनाने के लिए प्रत्येक दो वर्गों की संख्या का योग उन दोनों वर्गों के ठीक ऊपर के वर्ग की संख्या से मेल खाना चाहिए।

180-degree

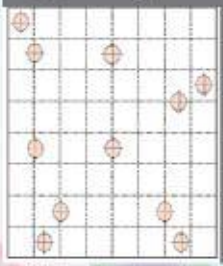

कैसे खेलें

पहेली को हल करने के लिए आप को ऐसी विभिन्न आकृतियां बनानी हैं जो गोले के केंद्र बिंदु ऊपर से नीचे व बाएं से दाएं देखने पर एक जैसी ही नजर आएं। ध्यान यह रखना है कि गोले का एक ही बार प्रयोग हो व आकृतियां प्रत्येक वर्ग में भर जाएं।

नंबर wheel

वर्ड web

नंबर pyramid

180-degree

बूझो तो...!

1. चांद-सा चेहरा गोल-मोल है
बिन पांवों के चलता।
रजा-रंक सभी को चुलाता
परिश्रम से है मिलता।

2. खेतकृषकों की फसली की जाती
रात्रि को मैं रखा करता।
बहुत ही कम मैं उड़ता हूं
एक स्थान पर हूं बैठा रहता।

3. एक विचित्र ऐसी चीज
उजली जमीन काला बीज।
जो मनुष्य इससे करते प्यार
वे बन जाते हैं होशियार।

4. पेट में से निकली
कमर में से मारी।
क्षण-भर में
फैली है उजियारी।

5. घर खेतों पर वह चलता है
हरे-भरे में पलता है।
बड़े पत्ते से उसके कान
दूर से कोई भी ले पहचान।

6. हरे रंग की उसकी पोशाक
बैठा है सबसे ऊंची शाख।
कुतर-कुतर कर फल खाता है
टें-टें कर के उड़ जाता है।

7. रंग है उसका पीला
सपाट है तो बीला।
पैला है तो फैला
कीमती है तो छैला।

उत्तर

1. चंदामा 2. जगूनू
3. पुस्तक 4. गोफिया
5. मिर्ची 6. तोता
7. केला

Illusion

शहद मिलते ही झूम उठती है मधुमक्खी

वसंत ऋतु का आगमन हो और फूलों की बात न चले, ऐसा कैसे हो सकता है। और जहां फूल हों वहां मधुमक्खियां न हों, ये तो संभव ही नहीं। आइए, मधुमक्खियों के बारे में कुछ दिलचस्प बातें जानते हैं।

मधुमक्खी को शहद का स्रोत यानी फूल मिल जाएं तो वह भाव-विभोर हो उठती है। अपने निवास पर आती है, नाच-नाचकर दूसरी मधुमक्खी मित्रों को बताती है कि शहद कहां और कितनी दूर है। शोध करने वालों ने पाया कि मधुमक्खियां बहुत अजीबोगरीब संदेश भी देती हैं। मधुमक्खियों पर शोध कर रहे वैज्ञानिक अत्याधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। मधुमक्खी के डंक पर छोटे से राडार एंटीना को लगाकर वैज्ञानिक ज्यामितीय आकारों से घिरी गुफा से यह ज्ञात करने का प्रयास कर रहे हैं कि मधुमक्खी अपनी उड़ान की दूरी का आकलन किस तरह करती है।

मधुमक्खी शैशवावस्था से ही जमीनी अध्ययन प्रारंभ कर देती है। जैसे-जैसे उसका अनुभव बढ़ता जाता है, वह तेज और दूर उड़ान भरने लगती है। शोधकर्ताओं के अनुसार यह मधुमक्खी के धीरे-धीरे सीखने का तरीका है, जिसके अंतर्गत वातावरण का अध्ययन टुकड़ों में किया जाता है। शिशु मधुमक्खी एकदम से छत्ते से निकलकर उड़ने नहीं लगती। पहले कुछ सप्ताह वह अधिकतर समय छत्ते के अंदर रहती है और केवल घरेलू काम करती है। पर खाली समय में थोड़ी-थोड़ी उड़ान भरती है।

वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पर एक परागकण के बराबर का राडार ट्रांसपांडर लगाकर उसके उड़ान मार्ग का अध्ययन किया। इन मधुमक्खियों का लैंड रोवर पर लगे राडार से पीछा किया गया। उनकी बार-बार की उड़ानों में यह पाया गया कि उड़ानों की दूरी लगातार बढ़ती जाती है। धीरे-धीरे इनका घर पर रहना कम हो जाता है और बाहर घूमना बढ़ता जाता है।

जब मधुमक्खी किसी अच्छे फूलों के गुच्छों को देखती है तो उसके नाचने की शैली से मधुमक्खियों को दूरी व दिशा का पता चल जाता है कि शहद कहां उपलब्ध है। कभी-कभी मधुमक्खियां खाद्य-पदार्थ की दूरी और दिशा को अपनी आंख की चमक से दर्शाती हैं।

परी देश के बादल या हवाई मिठाई

दोस्तो! आपने हवाई मिठाई का नाम सुना है? नहीं? तो बुढ़िया के बाल/बुढ़िया के बाल का नाम जरूर सुना होगा? पहचान गए ना? हम कॉटन कैण्डी की बात ही कर रहे हैं। संभवतः रुई की तरह मुलायम होने की वजह से इसे यह नाम दिया गया। मुंह में डालते ही अपनी मिठास छोड़कर गायब हो जाने वाली यह मिठाई किसी का भी मन ललचा देती है। बच्चे ही नहीं, बड़े-बूढ़े भी गुलाबी, नारंगी, सफेद व अन्य कई रंगों में मिलने वाली इस मिठाई के दीवाने हो जाते हैं। अमतौर पर मेलों और गली-मुहल्लों में बिकने वाली इस मिठाई को नमी-बिरमी मौसम में भी देखा जा सकता है।

आइये आपको इसी मिठाई के कुछ दिलचस्प तथ्य बताते हैं-

- शुरू-शुरू में कॉटन कैण्डी को 'फेयरी फ्लॉस' कहा जाता था। फूली-फूली सी यह सफेद मिठाई परियों के देश के बादलों जैसी लगती थी, शायद इसीलिए।
- फेयरी फ्लॉस बनाने की मशीन का पेटेंट कैण्डी-निर्माता जॉन सी. वर्टन और डेंटिस्ट विलियम मॉरीसन के नाम पर है।
- अमरीका में हर 7 दिसम्बर को नेशनल कॉटन कैण्डी दिवस मनाया जाता है।
- हवाई मिठाई में सचमुच हवा की मात्रा ही ज्यादा होती है, चीनी तो नाम मात्र की होती है। मशीन में चीनी के दानों को गलाकर इन्हें तेजी से घुमा-घुमाकर यह मिठाई तैयार की जाती है। हवा भरी रहने के कारण ही तो मुंह में डालते ही यह छू-मंतर हो जाती है।
- फेयरी फ्लॉस सबसे पहले वर्ष 1904 में सेंट लुइस वर्ल्ड फेयर में बिकी। वहां इसे लोगों ने हाथों-हाथ लिया और इसकी जबरदस्त बिक्री हुई।
- जापान और चीन में तो लोग इस पर कलाकारी का हाथ आजमाते हैं और इसे अलग-अलग आकर्षक आकारों में बनाकर बेचते हैं।
- कॉटन कैण्डी में सिर्फ एक ही मुख्य सामग्री होती है, वो है चीनी।
- हवाई मिठाई की लोकप्रियता किसी एक देश की सीमा में नहीं बंधी है। दुनियाभर के बच्चे इसे बड़े चाव से खाते हैं।
- कॉटन कैण्डी में सोडा की एक बोतल से भी कम चीनी होती है।
- मूल रूप से कॉटन कैण्डी का रंग चीनी से बनाने के कारण सफेद ही होता है। लेकिन इसे आकर्षक बनाने के लिए इसे गुलाबी, नारंगी, आसमानी या अन्य रंग दे दिये जाते हैं।

प्रस्तुति: अंजू

किताब बेचने के लिये

नमस्ते।
ठीक है!
क्या तुम्हें इतना भी पता नहीं कि नमस्ते के बदले नमस्ते बोलते हैं!
ठीक है, इसका मतलब?!
ओह?!
क्या तुम्हें नमस्कार का मतलब मालूम है?
इस तरह से नहीं! तुम्हें नमस्कार नहीं बोलना चाहिए!

क्या बात है?
एक बात बताइए महोदया
क्या हम अच्छी आवाजें और तौर-तरीके बाजार से खरीद सकते हैं?
नहीं! लेकिन क्यों?
मैंने इन्हें नमस्ते किया। बदले में ये मुझे नमस्ते नहीं कर रहे हैं।
लेकिन दोस्त, मेरी नमस्ते करने की आदत नहीं है।
तुम्हें बदले में नमस्ते बोलना चाहिए।
J.B.C.
अब तुम क्या चाहते हो?
मेरे पास ऐसी किताब है, जो तुम्हें जीवन के तौर-तरीके सीखा सकती है।
और वो भी केवल सौ रुपए में।

कविताएं

बिल्ली का बच्चा

छोटा सा बिल्ली का बच्चा
घूम रहा था घर में।
म्याऊं-म्याऊं कर बेचारा
डोल रहा था घर में।
उसे छोड़कर चली गई मां
रहा अकेला घर में।
चिन्टू लाया दाना पानी
जो कुछ भी था घर में।
पेट भरा जो उस बच्चे का
लगा दौड़ने घर में,
सब बच्चों का दोस्त बन गया
रौनक आ गई घर में।
चूहों का तब हुआ सफाया
नजर न आते घर में,
बड़े काम का निकला बच्चा
चहल-पहल थी अब घर में।

वीरेन्द्र जैन

जैसी करनी वैसी भरनी

एक था मोटू, नाम मुटल्ला
बिना बात के करता हल्ला।
सारे बच्चे, उससे डरते
चाहे जिसको देता टल्ला।
हर कोई उससे कतराता
कोई उसके पास न जाता।
करता अक्सर छीनाझपटी
महाआलसी बड़ा निठल्ला।
हाट बाजार से घोड़ा लाया
नाम था जिसका माशा अल्ला।
अकड़ दिखाकर एड़ लगाई
घोड़ा उछला मार पुछल्ला।
गिरा जमीं पर वही धड़ाम
आज मिला नहले पे दहला।
मुंह छिपा कर घर से भागा
छूट गया बच्चों का पल्ला।

सबसे अच्छी घोड़ा गाड़ी

पी पी करती, छुक छुक चलती
पापाजी की धक्का गाड़ी।
काला धुआं छोड़ के जाती
उड़न खटोला यह गाड़ी।
पेट्रोल सारा पी जाती
फिर भी प्यासी रहती गाड़ी।
बिना ब्रेक के जब तक रुकती
सचमुच अड़ियल यह गाड़ी।
बड़ी मशक्कत करवाती है
तब बढ़ती धक्का गाड़ी।
डोला करती बीच सड़क पर
हमें थका देती गाड़ी।
दूर-दूर तक सैर कराती
सबसे सस्ती यह गाड़ी।

मच्छरों की राजधानी

इस चित्र में जिस जीव की प्रतिमा दिखाई दे रही है। उसे आपने पहचान ही लिया होगा। जी हां, यह हमारी नींद में खलल डालने वाला मच्छर ही है। इसकी यह विशालकाय प्रतिमा कनाडा में कोमरनो, मनितोबा नामक स्थान पर एक सड़क के किनारे लगी हुई है। इस स्थान को मच्छरों की राजधानी भी कहा जाता है। स्टील से बनी लगभग क्‍ फीट की यह प्रतिमा वर्ष क-ख में निर्मित

सब डबल

जी हां, मॉस्को में एक ऐसा रेस्त्रां है जहां हर शक्ल के दो इंसान हैं। रेस्त्रां का नाम है ट्विन स्टार। इस रेस्त्रां में जितने भी वेटर और कर्मचारी रखे गए हैं वे जुड़वा होते हैं। रेस्त्रां में आने वाले ग्राहकों के लिए यह एक प्रकार का मनोरंजन होता है। जब वे हर शक्ल के दो इंसान देखते हैं। रेस्त्रां की मालकिन अलेक्सी खोडरकोवस्की के दिमाग में अपने आप में अनूठा इस प्रकार का रेस्त्रां खोलने का विचार

कैसे आया। इसकी कहानी बड़ी अनूठी है। वर्ष क-ख में एक फिल्म आई थी सोवियत, जिसमें एक लड़की आइने में अपनी शक्ल देखकर अपने जुड़वां अस्तित्व की कल्पना करती है। बाद में दोनों की कहानी अलग-अलग चलती है। इस फिल्म को देखकर ही अलेक्सि के दिमाग में ऐसी कोई जगह बनाने का ख्याल दिमाग में आया और उन्होंने ट्विन स्टार रेस्त्रां खोल

रोबोट वाला रेस्त्रां

चीन में एक अत्याधुनिक रेस्त्रां खुला है। जहां खाने की टेबल पर बहुत देर तक भोजन का इंतजार नहीं करना पड़ता न ही वेटर को टिप देनी पड़ेगी। दरअसल, यहां रिसेप्शनिस्ट से लेकर बावर्ची तक का काम रोबोट कर रहे हैं। यह रोबोट खाना पकाने, परोसने के साथ आगंतुकों का मनोरंजन भी करते हैं। इस रेस्त्रां में कई अलग-अलग किस्म के रोबोट हैं। यहां तक कि रेस्त्रां में स्वागत करने के लिए भी रोबोट ही है। जो हैलो, वेलकम टू द रोबोट रेस्त्रां कहकर स्वागत करता है। रेस्त्रां में खाना पकने के तुरंत बाद एक वेटर रोबोट उसे लेकर हाजिर हो जाता है। प्लेटों को इस तरह से बनाया गया है कि वेटर रोबोट जब उसे सही टेबल पर पहुंचता है। तभी प्लेट उसके हाथ से अलग होती है। ग्राहकों के खाना शुरू करने पर गाने वाला रोबोट मनोरंजन करता है। दो घंटे बाद होने के बाद एक रोबोट पांच घंटे तक लगातार काम कर

सबसे छोटी किताब

दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ मन में कुछ करने की ठान लिया जाए तो असंभव सा दिखने वाला लक्ष्य भी संभव हो जाता है। इसी तर्ज पर हल्द्वानी के जय प्रकाश उपाध्याय ने दुनिया की सबसे छोटी किताब लिखने की ठानी और उसे पूरा कर दिखाया। इसका साइज चार गुणा चार एमएम और मोटाई 5 एमएम है। 64 पृष्ठ की इस पुस्तक में 64 देशों के नाम उनके राष्ट्र ध्वज के साथ हैं। प्रकाश ने इस छोटी सी किताब को वाटर कलर व एक्रेलिक पेंट से लिखा है। कई दिनों की कड़ी मेहनत से यह पुस्तक तैयार की गई है। इसकी बाइंडिंग व कटिंग भी स्वयं लेखक ने

गिनीज रिकॉर्ड्स

इस शख्स को घर साफ करना कितना पसंद है ये तो नहीं मालूम, लेकिन जेम्स ब्राउन के पास वैक्यूम क्लीनर का सबसे बड़ा कलेक्शन है।

ऊंची ऐड़ी की सैंडिल पहनकर चलना भी मुश्किल होता है, लेकिन जर्मनी की जूलिया उसे पहनकर दौड़ लगाती है। सौ मीटर की दौड़ को इन्होंने 14.53 सेकंड में पूरा किया है।

सन 1896 में पहली बार किसी रोड एक्सीडेंट में किसी व्यक्ति की मौत हुई थी, इससे पहले किसी भी दुर्घटना में मौत नहीं हुई थी।

श्रीनगर का ट्यूलिप गार्डन

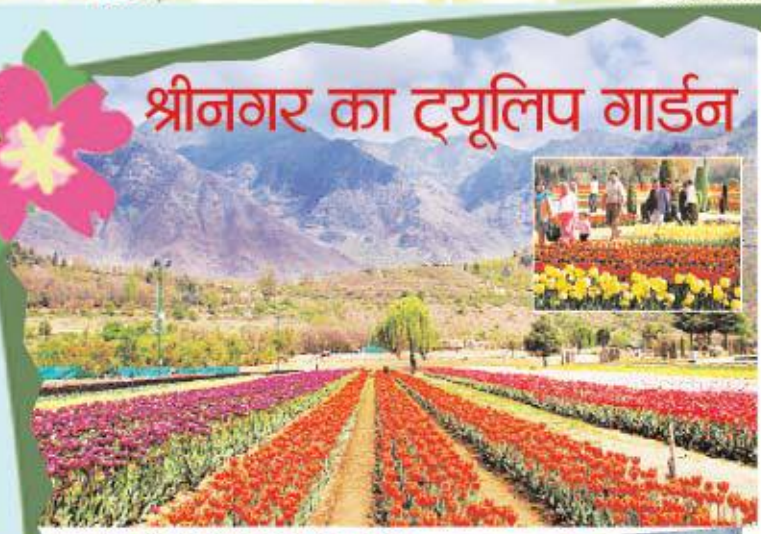

जम्मू एवं कश्मीर की राजधानी श्रीनगर का ट्यूलिप गार्डन पर्यटकों के लिये एक प्रमुख पर्यटन आकर्षण है। वसंत के दौरान वहां हजारों पर्यटक इसे देखने के लिए उमड़ते हैं। इस मौसम में यह गार्डन करीब एक महीने तक खुला रहता है। गार्डन को देखने के लिए देश के विभिन्न भागों के अलावा मलेशिया, थाईलैंड और यूरोप से भी पर्यटक आते हैं।

इंदिरा गांधी ट्यूलिप गार्डन, श्रीनगर शहर से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। डल झील के किनारे जबरवान पहाड़ियों की चोटियों पर स्थित यह गार्डन बेहद आकर्षक और लुभावना है। हर साल 7 दिन तक यहां ट्यूलिप समारोह चलता है, जिसमें 70 किस्मों से ज्यादा ट्यूलिप देखने को मिलते हैं।

गार्डन कुल 90 एकड़ के बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है। फूलों के मौसम में इस बगीचे में कम से कम 13 लाख ट्यूलिप बल्ब एक बार में खिलते हैं। यह गार्डन, शालीमार गार्डन, निशात बाग, चश्म-ए-शाही गार्डन और अन्य मुगल गार्डन के पास ही स्थित है।

सैर सपाटा

गुजरात का राज्यपुष्प
गेंदा

भारत सहित कई देशों में
गेंदा पाया जाता।
लंका, कर्ला, पाक आदि से
इसका गहरा नाता।
उगता अपनेआप कहीं यह
कहीं उगाया जाता।
माला से लेकर सब्जी तक
काम बहुत से आता।
छह फीट तक ऊंचे पौधे पर
फूल निराले खिलते।
पीले-लाल, सुनहरे पीले
कई रंगों में मिलते।
सभी अंग उपयोगी इसके
औषधि खूब बनाते।
खून साफ करके शरीर का
सारे रोग भगाते।
अपने इन्हीं गुणों के कारण
अमरीका तक भाया।
लिंकन से लेकर क्लिंटन तक
सबके मन को भाया।

हिमाचल प्रदेश का राज्यपुष्प
घंटी बुरान्स

हिमप्रदेश ने बदल दिया है
बच्चों अपना फूल।
पहले लाल रंग वाला था
आज गुलाबी फूल।
भारत में मिलती बुरान्स की
कई जातियां प्यारी।
रंगबिरंगी सुंदर-सुंदर
सबकी आभा न्यारी।
इन्हीं जातियों में मिलती है
जाति एक मतवाली।
घंटी जैसी इसकी काया
लगती बड़ी निराली।
रंग सफेदी लिए गुलाबी
फूल झाड़ियों वाला।
लेकिन वृक्षों पर खिलता
होता बड़ा निराला।
अपनी सुंदरता के कारण
जग में आना जाता।
मिलकर साथ अन्य फूलों के
संकर फूल बनाता।

जम्मू कश्मीर का राज्यपुष्प
सामान्य बुरान्स

कमल बदल कर नये फूल को
लोगों ने अपनाया।
राजकीय पद देकर इसको
इसका मान बढ़ाया।
फूल निराला पर्वत वाला
सुंदर इसकी काया।
अपनी सुंदरता के कारण
सबके मन को भाया।
घने और ऊंचे पौधों पर
यह गुच्छों में खिलता।
नीली, लाल, गुलाबी आभा
वाला प्रायः मिलता।
धारी और चितियां मिलकर
इसका रूप सजातीं।
भंवरों की कई टोलियां
खिंच कर दौड़ी आतीं।
इसकी सुन्दरता के सम्मुख
सारे फूल लजाते।
इसलिए कश्मीरी इससे
ड्रॉइंग रूम सजाते।

पांडिचेरी का राज्यपुष्प
नागलिंगा

सुन्दर फूलों वाला पौधा
भारत में मिल जाता।
वेनेज़ुवेला पेरु तक से
इसका बसेरा नाता।
वृक्ष बीस मीटर तक ऊंचा
होता पतझड़ वाला।
भारी बड़े फूलों के कारण,
लगता बड़ा निराला।
मौसम में यह गुच्छे वाले
फूलों से भर जाता।
नाग समान रूप के कारण
नाग पुष्प कहलाता।
रंग-बिरंगी इसकी काया
इसका रूप सजाती।
मोहक मधुर सुगंध अनोखी
सबके मन को भाती।
फूल बड़ा उपयोगी है यह
औषधि खूब बनाता।
छोटे-बड़े कई रोगों को
पल में दूर भगाता।

उड़ीसा का राज्यपुष्प
अशोक का फूल

कमाल बदल कर नये फूल को
अब इसने अपनाया।
पदवी देकर राजकीय की
इसका मान बढ़ाया।
फूल अशोक हो गया है अब
राजकीय यह जानो।
सीताजी से सम्बन्धित है
इसको तुम पहचानो।
आते ही मौसम वसन्त का
गुच्छों में यह खिलता।
किन्तु बहुत ही कम वृक्षों पर
फूल निराला मिलता।
रंग बदल कर पीले से यह
सिन्दूरी हो जाता।
भीनी-भीनी खुशबू से यह
रातों को महकाता।
जीवन लम्बा नहीं मगर यह
जितना जीवन पाता।
देकर खुशियां सारे जनको
धीरे से सो जाता।

–डॉ.परशुराम शुक्ल–

आन्ध्र प्रदेश का राज्यपुष्प
जल कुमोदिनी

भारत के समतल भागों में
फूल अनोखा मिलता।
बेल बांग्ला, श्रीलंका में
सभी जगह यह खिलता।
कमल समान फूल अति सुंदर
तालाबों में मिलता।
रुके हुए उथले पानी में
प्रायः दिन में खिलता।
पौधे की मजबूत जड़ें सब
मिट्टी में घुस जातीं।
और तैरती गोल पत्तियां
पानी में उतरतीं।
धवल श्वेत पंखुड़ियां इसकी
इसका रूप सजातीं।
मध्य भाग की पीली केसर
सबके मन को भाती।
अंग सभी उपयोगी इसके
काम बहुत से आते।
इनको खाते, दवा बनाते
धन भी खूब कमाते।

विदेशी पेन

बच्चों, आपको अपने से बड़ों, यथा माता-पिता, शिक्षक, भाई-बहनों सहित अन्य का कहना जरूर मानना चाहिए। इन्हें तुम्हारी तुलना में जीवन का अनुभव ज्यादा होता है। वे अपने अनुभव के आधार पर तुम्हें रोजाना ज्ञान की बातें बताते हैं। जो बच्चे इनका कहना नहीं मानते, उन बच्चों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वे दुखी होते हैं। प्रस्तुत कहानी कुछ ऐसी ही सीख दे रही है।

आठवीं कक्षा में पढ़ती है दिशा। कल ही मामी ने उसे एक विदेशी पेन उपहार में दिया। पेन बहुत सुंदर था। लिखाई करते समय उसमें बिजली चमकती थी। पेन की पीठ पर एक छोटी-सी घड़ी भी थी, जो समय बताती थी। दिशा ने उसे अलमारी में छिपाकर रख दिया। पर थोड़ी-थोड़ी देर में वह उसे निकाल कर खेलने लग जाती। उस पेन को लेकर वह बहुत खुश थी।

'मां, मैं यह पेन कल स्कूल ले जाऊंगी।' दिशा ने मां से पूछा तो मां ने मना कर दिया, 'नहीं, बहुत कीमती है, ये कहीं गुम गया तो?' दिशा मान गई। स्कूल में उसने श्यामली को पेन के बारे में बताया। पर श्यामली ने उसकी बात को सच नहीं माना।

'धत्! कहीं ऐसा पेन होता है। मैं नहीं मानती।'

'श्यामली मेरे पास है ऐसा पेन, जो विदेशी है। मेरी मामी ने कल ही मुझे उपहार में दिया था। तुम चाहो तो उसे घर आकर देख सकती हो।' दिशा ने प्रस्ताव रखा तो श्यामली ने ना में सिर झटका, 'घर आकर क्यूं? पेन कोई घर रखने की चीज है। ऐसा पेन तो स्कूल लाना चाहिए और सबको बताकर प्रशंसा पानी चाहिए।'

'मां मना करती है। कहती है गुम जायेगा। बहुत कीमती है वो।' प्रत्युत्तर में दिशा ने धीरे से कहा। 'सिर्फ बहाना बना रही हो तुम। अपनी बात सही ठहराने के लिए।'

'नहीं सच कह रही हूं।'

'अगर तुम सच्ची होती तो पेन अलमारी में न होकर तुम्हारे बस्ते में बंद होता। मैं नहीं मानती तुम्हारी बात को।' श्यामली की बात से दिशा का मन बुझ गया। उसने बुझे हुए मन से कहा, 'तुम न मानो तो तुम्हारी मर्जी।'

'तुम इतनी छोटी बच्ची भी नहीं जो इस तरह की चीजों को खो दोगी।' श्यामली ने उसका उपहास उड़ाते हुए कहा। दिशा को बहुत बुरा लगा। दुख तो इस बात का था कि उसे झूठा समझा जा रहा है। मां अगर एक दिन के लिए भी पेन लाने देती तो कितना अच्छा होता। इस तरह उसकी फजीहत नहीं होती अपनी सहेली के सामने।

छुट्टी के बाद घर जाते ही दिशा ने अपनी अलमारी खोली। पेन वहां नहीं था। दिशा घबरा गई। पेन तो यहीं रखा था उसने। कहीं अमरेन्दु भैया ने तो नहीं उठा लिया?' वह अलमारी की चीजें इधर-उधर उलटने पलटने लगी। पेन कहीं नहीं था। थक-हारकर अफसोस करती वह पलंग पर बैठ गई। तभी उसकी नजर टेबिल के नीचे गई। पेन का ऊपरी भाग वहां चमक रहा था। झट से झुककर उसने पेन उठा लिया। 'आह! मेरा लवली पेन' कहते हुए उसने पेन को चूम लिया।

'अगर तुम गुम जाते तो श्यामली की बात सच्ची हो जाती। वह मुझे झूठा मानती है, पर मैं झूठी नहीं हूं। तुम हो मेरी सच्चाई के गवाह!' दिशा ने पेन को फिर से अलमारी में बंद कर दिया।

आज सुबह स्कूल जाने से पहले उसने पेन ले जाने के लिए मां से पूछना उचित नहीं समझा। मां मना कर देगी तो फिर पेन स्कूल ले जाना मुश्किल हो जाएगा। केवल एक दिन के लिए वह पेन स्कूल ले जाना चाहती थी। ताकि वह अपने को सच्चा साबित कर सके। फिर उसके पास अगर एक सुन्दर पेन है तो...कुछ सोचते हुए दिशा ने उस अनोखे पेन को बस्ते में रख दिया। दिशा तय कर चुकी थी कि वह श्यामली के अलावा यह पेन किसी और को नहीं बतायेगी।

पेन को देखते ही श्यामली ने कहा, 'इतना सुंदर पेन, वाकई अद्भुत!'

'अब बोलो □या मैं झूठी हूं?' दिशा ने ठुमक कर कहा। 'नहीं तुम सच बोल रही थी। लो संभालना इसे,कहीं खो न जाए। बड़ा अनोखा है यह पेन। छिपाकर रखने लायक। तु□हारी म□मी सही कहती है।'

दिशा ने पेन को फिर से बस्ते में रख दिया। स्कूल की आधी छुट्टी में भी वह बाहर नहीं गई। कोई पेन चुरा न ले। इस पेन के बारे में सुहाना को पता चल ही गया। श्यामली के पेट में बात पची नहीं। आधी छुट्टी में उसने दूसरी लड़कियों को बता ही दिया। श्यामली के पेट में बात पचती ही नहीं। दिशा को गुस्सा आ रहा था, पर अब □या हो सकता है। सुहाना तो उसके पीछे ही पड़ गई, 'दिखा पेन। सुना है बहुत अद्भुत है। मैं भी देखना चाहती हूं।' वह देखने के लिए बराबर जिद कर रही थी। गणित के पीरियड में तो उसने तंग करके ही रख दिया, 'मेरे पास होता ऐसा पेन तो मैं जरूर उसी से सवाल हल करती। तु□हारी तरह बस्ते में छिपा कर नहीं रखती...पेन निकाल न बाहर। □या कोई खा जाएगा?'

पर दिशा ने पेन बाहर नहीं निकाला। स्कूल की जल्दी छुट्टी हो गयी थी। वह सोच में डूबी थी कि बस आ गई। सुहाना ने दौड़कर जगह रोक ली। दिशा सबसे आखिर में चढ़ी थी। पूरी बस भर चुकी थी। सुहाना ने खिसक कर उसे जगह देते हुए कहा, 'तुम चाहो तो बैठ सकती हो यहां।' दिशा सुहाना के करीब बैठ गई।

सुहाना ने फिर कहा, 'पेन दि□□ाओगी?' अनमने मन से दिशा ने पेन बाहर निकाला। पेन को दे□ते ही सुहाना लगभग उस पर झपट पड़ी। इसी बीच बस उछली। दिशा की पकड़ पेन से ढीली हुई, और सुहाना ने भी उसे ठीक से पकड़ा नहीं था। पेन छूट कर उछलता हुआ खिड़की से बाहर जा गिरा। बस इस समय एक पुलिया से गुजर रही थी।

पेन कहां गिरा, मालूम नहीं। दिशा के दुख का पार नहीं था। उसका प्यारा पेन खो चुका था। उसकी आंखों से निरंतर झरते आंसुओं को सुहाना के दो बोल 'सॉरी' के रोक नहीं पा रहे थे। कितना अच्छा होता अगर मां कहना मान लेती। काश! वह पेन लेकर स्कूल नहीं जाती तो आज उसका प्यारा पेन उसके पास होता। घर जाकर वह उससे खेल रही होती। मां की बात नहीं मानने का □या यही परिणाम होता है □या?

रह-रहकर यही बात उसके मन- मस्तिष्क में घूम रही थी। 'अब मैं हमेशा तु□हारा कहना मानूंगी मां।' दिशा ने निश्चय किया।

–डॉ. विमला भंडारी

कहानी

You re never
without

fully dressed
a smile.

कहानी

-पंकज राय

मैं लेट हो गया हूं। मुझे जल्दी से जल्दी बाबा के पास पहुंचना होगा।
मैं हर रोज कक्काजी से बाल्हंस से एक कहानी पढ़कर सुनाता हूं

फ्रेंजी किंग

पर तुम तो अभी क ख ग घ... पढ़ना सीख रहे हो। कहानियां पढ़ना तो तुम अभी जानते ही नहीं?
कम उम्र के कारण मैं कहानियां नहीं पढ़ सकता तो क्या हुआ? बाबाजी की अधिक उम्र के कारण कुछ सुनाई भी तो नहीं पड़ता है।
! !

Life is the flower for which love is the **honey.**

Quotes

"LIFE? A FLOWER AND LOVE IS THE NECTAR!"

बच्चो, तुम्हें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तुम्हारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तुम्हें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वाक्य दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और

क. स्कूल जाने का समय हो गया है।
It is time for school.
इट इज टाइम फॉर स्कूल।

ख. यह आपका दोष नहीं था।
It was not your fault.
इज वाज नॉट योअर फॉल्ट।

घ. बालक ने कविता सुनाई।
The boy recited a poem.
द बॉय रिसाइटिड ए पोइम।

च. लड़का स्कूल नहीं आया।
The boy did not come to school.
द बॉय डिड नॉट कम टू स्कूल।

छ. मुख्याध्यापक ने मेरा जुर्माना माफ कर दिया।
The headmaster exempted my fine.
द हैडमास्टर इग्जेंप्टिड माइ फाइन।

ट. उसे अंग्रेजी में विशिष्टता प्राप्त हुई है।
He has got distinction in english.
ही हैज गॉट डिस्टिंक्शन इन इंग्लिश।

ठ. तुम्हारे पास कला के विषय हैं, या विज्ञान के?
Have you offered arts or science?
हैव यू ऑफर्ड आर्ट्स ऑर साइंस?

ड. मेरे पास भौतिकी, रासायनिक और जीव विज्ञान हैं।
I have offerd physics, chemistry and biology.
आई हैव ऑफर्ड फिजिक्स, कैमेस्ट्री एंड बायॉलोजी।

ढ. क्या कोई फालतू कॉपी आपके पास है।
Do you have a spare exercise book/ note book?
डू यू हैव अ स्पेअर एक्सरसाइज बुक/नोट बुक?

त. मुझे बड़ा अफसोस है, जो आपको इतनी देर तक मेरा इंतजार करना पड़ा।
I am awfully sorry to have kept you waiting so long.
आइ एम ऑफुली सॉरी टु हैव कैप्ट यू वेटिंग सो लौन्ग।

Antonyms

Shut - बंद	**Open** - खुला
Sick - बीमार	**Healthy** - स्वस्थ
Silent - शांत	**Noisy** - कोलाहल
Silly - मूर्ख	**Intelligent** - बुद्धिमान
Simple - सरल	**Complicated** - जटिल
Sink - डूबना	**Rise** - उदय

Word-Power

- Components — अंश, टुकड़ा
- Jew — यहूदी
- Sore — घाव, पीड़ा
- Marine — समुद्री
- Pinch — चिकोटी काटना
- Wagon — चार पहियों की गाड़ी

English-Hindi Phrases

Bring into notice- ध्यान में लाना।

Brought over- आगे ले जाया गया।

Bring into operation- चालू करना, अमल में लाना।

Brief note is placed below - संक्षिप्त नोट नीचे रखा है।

Brief summary of the case is placed below- मामले का सारांश नीचे रखा है।

Synonyms

Especial,
Particular,
Peculiar
Special

खास, विशिष्ट, विशेष

(अगले अंक में जारी)

एक निहायत काले आदमी ने एक काला सूट सिलवाया। जब उसने पहली बार वो सूट पहना तो अपने दोस्त से पूछा, 'कैसा लग रहा है मेरा नया सूट?'
'लग तो बढ़िया रहा है,' दोस्त बोला। लेकिन, यार ये पता नहीं चलता कि सूट कहां खत्म हुआ है और तुम कहां से शुरू हुए हो।

चींटू- तूने कोई श्रीदेवी मूर्ती देखी है।
मींटू- हां।
चींटू- कैसन सी?
मींटू- बिन बताए हकैती।

मालकिन- क्या तुमने फ्रिज साफ कर दिया?
नौकरानी- हां बीबीजी, फ्रिज में पड़ी आइसक्रीम सबसे स्वादिष्ट थी।

सोनू-यार, मैं अगर गधा होता तो क्या तुम भी दोस्ती के खातिर गधे बन जाते?
मोनू- गधा तो नहीं बनता, पर दोस्ती की खातिर तुम्हें घास जरूर खिलाता।

शिक्षक -बच्चो तुम आपस में एकता से और मिलकर रहा करो। हर काम मिल-जुलकर करने से बड़ा लाभ होता है!
छात्र- सर जब हम परीक्षा के परचे आपस में मिलकर करते हैं तो आप नाराज क्यों होते हैं?

गीता- दुनिया में कैसे-कैसे 420 लोग भरे पड़े हैं।
रीता- क्यों क्या हुआ?
गीता- आज सवेरे दूधवाली मुझे खोटी अठन्नी दे गई।
रीता- कहां है वह अठन्नी।
गीता- वह तो मैंने सब्जी वाले को देकर सब्जी खरीद ली।

एक वृद्ध सज्जन ने एक कम्पनी के दफ्तर में जाकर मैनेजर से कहा- 'आपके दफ्तर में मेरा लड़का काम करता है। क्या मैं उससे मिल सकता हूं?'
मैनेजर ने गौर से देखा और कहा- 'खेद है कि आप देर से आये! आपका अंतिम संस्कार करने के लिए वह छुट्टी लेकर अभी-अभी गया है।'

रोगी- डॉक्टर साहब मैं ग़रीब आदमी हूं। आपकी फीस नहीं दे सकता। अगर आपने मेरा इलाज मुफ्त में कर दिया, तो मैं कभी आप का काम मुफ्त में कर दूंगा।
डॉक्टर- तुम क्या करते हो ?
रोगी- जी, श्मशान घाट पर लाशें जलाता हूं।

डॉक्टर- मैं आपको काफी दवाइयां दे चुका हूं, लेकिन असर नहीं हुआ। अब मैं दवा बदल कर देखता हूं।
रोगी- नहीं डॉक्टर साहब, अब मैं डॉक्टर बदलने की सोच रहा हूं।

अपराधी (मित्र से)- मैं श्रमदान करके आ रहा हूं।
मित्र- अच्छा, कहां से?
अपराधी- जेल से। छह महीने का सश्रम कारावास हुआ था।

पहला कैदी- तुम जेल में कैसे आये?
दूसरा- छोटी सी रस्सी चुराने के अपराध में।
पहला- लेकिन ऐसा हो नहीं हो सकता।
दूसरा- अरे भाई ऐसा ही हुआ था। लेकिन रस्सी के सिरे पर भैंस भी बंधी हुई थी।

चिंटू आराम से बैठा था।
मींटू (चिंटू से)- कुछ काम करो।
चिंटू- मैं गर्मियों में काम नहीं करता हूं।
मींटू- और सर्दियों में?
चिंटू- गर्मियां आने का इंतजार।

अव्वल (अपने मजिस्ट्रेट पिता से)- पिता जी! आप मुझे सालमिरख पर क्या तोहफा देंगे?
पिता (जो उस समय किसी मुकदमे के विषय में सोच रहा था) बोला- दस साल, सश्रम कैद।

अध्यापक- रेल किराया इतना अधिक बढ़ जाने पर भी यात्रियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसका कारण बताइये।
छात्र- इसका कारण यह है कि हर एक आदमी यही सोचता है। अगले साल किराया और बढ़ जाएगा, इसलिए अभी यात्रा कर ली जाए।

पत्नी- टी.वी. पर सूचना सुनकर हाजमे की गोली नियमित रूप से खाने लगी थी।
पति- तुम चाहे जितनी हाजमे की गोली खाओ, तुम्हारे पेट में कोई बात नहीं पचेगी।

सुरेश ने मिथिलेश से कहा- तुम रुमाइते क्या हो, मैंने दो-दो विश्वविद्यालयों से पढ़ाई की है।
मिथिलेश- उससे क्या होता है? दो गायों का दूध पीने के बाद भी बछड़ा बैल ही तो बनता है।

पति- अब बताओ मुलाकात कौन है? तुम बस में अपना छाता छोड़कर चली आ रही थी। मैं उसे तो ले ही आया साथ ही अपना छाता भी लाना नहीं भूला।
श्रीमतीजी- मगर श्रीमान् घर से तो हम में से कोई भी छाता लेकर नहीं चला था।

आफिसर- एक दिन जब मैं अकेला जंगल में जा रहा था तो मुझे दो डाकू मिले औ मेरी घड़ी, रुपया और माल सब कुछ ले गए।
हमीद- लेकिन तुम्हारे पास तो पिस्तौल भी थी?
आफिसर- हां थी तो, मगर उस पर उसकी नजर नहीं पड़ी।

एक अभिनेता से उसके पुत्र ने पूछा- इतनी गर्मी में कार की खिड़कियों के पर्दे और शीशे क्यों चढ़ा रखे हैं।
अभिनेता- अगर पर्दे और शीशे गिरा दिये तो लोग क्या कहेंगे कि इतने बड़े स्टार के पास एयर कंडीशनड गाड़ी भी नहीं।

सर्दी की बर्फबारी

जब भी बर्फबारी होती है, तुहारे मन में यह सवाल जरूर उठता होगा कि यह बर्फबारी होती यों है? आखिर आकाश में बर्फ कैसे बनकर नीचे गिरती है?

यह तो तुहें पता है कि हमारी धरती पर जल एक लगातार चक्र में चलता है। सूरज की गर्मी से नदियों, तालाबों, झीलों से जल भाप बनकर उड़ जाता है और वातावरण में पहुंच जाता है। जब इस तरह के बहुत सारे वाष्पकण इकट्ठे हो जाते हैं तो ये बादल का रूप ले लेते हैं। जब ये बादल आपस में टकराते हैं तो बारिश होती है।

लेकिन जब ये बादल वातावरण में अधिक ऊपर चले जाते हैं तो वहां का तापमान बहुत कम हो जाता है और वातावरण बहुत ठंडा हो जाता है। बादल का तापमान बहुत नीचे पहुंचने पर बादलों में मौजूद वाष्पकण नन्हें-नन्हें बर्फ के कणों में बदल जाते हैं। हवा इन बर्फ कणों का वजन सहन नहीं कर पाती और ये कण बादल से नीचे की ओर गिरने लगते हैं। जब वो गिरते हैं, तो एक-दूसरे से टकरा कर जुड़ने लगते हैं। इस तरह इनका आकार बड़ा होने लगता है। जब ये कण पृथ्वी पर गिरते हैं तो हम उसे बर्फबारी कहते हैं।

यह कहा जा सकता है कि बर्फ दरअसल जमा हुआ पानी है। बर्फबारी में धरती पर अिसर बर्फ की सफेद चादर-सी बिछ जाती है। गिरती हुई यह बर्फ हमेशा नर्म नहीं होती है। यह बर्फ गिरते हुए एक जगह इकट्ठों न गिरकर हवा के साथ इधर-उधर फैल जाती है। इसलिए यह कहीं बहुत ज्यादा और कहीं बहुत कम गिरती है। कभी यह छोटे-छोटे पत्थर के रूप में, तो कभी बारिश के साथ गिरने वाले सिित बर्फ यानी ओलों के रूप में भी गिरती है। बर्फ चाहे जिस रूप में भी गिरे, जहां यह गिरती है, वहां का तापमान काफी गिर जाता है। आसपास के इलाके भी सर्द हवाओं की चपेट में आ जाते हैं। अब तुहारे मन में यह सवाल जरूर लगती है। ऐसा होता यों है?

हवा बढ़ाती है सर्दी

सर्दी का मौसम है, दोस्तो। चारों ओर ठंडी हवा से सभी परेशान हैं। हवा रुकने पर ठंड से थोड़ी राहत महसूस होती है। इस तेज चलती हवा से हमें ज्यादा सर्दी

हवा चलने पर थर्मामीटर का पारा नीचे नहीं गिरता। ठंड में हवा चलने पर अधिक ठंड लगने का कारण यह है कि शरीर से विशेषकर शरीर के खुले भागों से शांत मौसम के मुकाबले अधिक गर्मी निकल जाती है। हमारे चेहरे और शरीर के अन्य अंगों के पास की हवा हमारे शरीर की गर्मी से धीरे-धीरे गर्म हो जाती है। फिर चेहरे और शरीर पर लिपटा गर्म हवा का यह कवच शरीर से निकलने वाली गर्मी को रोकता है। यदि हमारे आसपास हवा स्थिर है तो शरीर के पास की गर्म हवा की परत ठंडी व भारी हवा द्वारा बहुत मंद गति से ऊपर की ओर विस्थापित होती है। जब हवा चलती है तो शरीर के पास की गर्म हवा को एकदम से परे हटा देती है। ठंडी हवा शरीर को स्पर्श करने लगती है। हवा जितनी तेज होगी, प्रति मिनट उसकी उतनी ही अधिक

दरअसल बर्फ उन स्थानों पर अधिक गिरती है जो इलाके या तो समुद्र से काफी ऊपर होते हैं या फिर ऊंचाई पर होते हैं। वातावरण में बर्फ काफी अधिक बनती है। जिसका एक छोटा हिस्सा ही नीचे पहाड़ों पर गिरता है। बाकी हिस्सा बारिश के रूप में नीचे आता है।

अब तुम सोच रहे होंगे कि बर्फ बनती और नीचे बारिश गिरती है, वो कैसे? वातावरण में मौजूद ओजोन की गर्म परतों के बीच से जब बर्फ के कण गुजरते हैं तो यह बर्फ पिघल जाती है और बारिश के पानी में बदल जाती है। जबकि ऊंचे पहाड़ों में तापमान पहले से ही शून्य डिग्री से काफी कम होता है, इसलिए वहां पर बर्फबारी होती है।

इस बर्फबारी से फायदा यह होता है कि पहाड़ों पर गिरी यह बर्फ गर्मियों में सूरज की तपिश से पिघलकर नदियों में पानी की आपूर्ति करती है। जिसे अ[illegible]सर खेती-बाड़ी, बिजली बनाने और अन्य कामों के लिए उपयोग किया जाता है।

इससे हमारे शरीर से प्रति मिनट ताप खोने की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी। इससे शरीर को तेज ठंड महसूस होती है।

तेज हवा के चलने से अधिक ठंड लगने का एक कारण और भी है। हमारी चमड़ी से वाष्प के रूप में नमी निकलती रहती है। इसके वाष्पीकरण के लिए ताप चाहिए। यह ताप हमारे शरीर के समीप की गर्म हवा की परत से मिलता है। यदि हवा स्थिर हो तो वाष्पीकरण की गति मंद होती है। यह इसलिए कि चमड़ी के पास की हवा वाष्प से जल्दी ही तृप्त हो जाती है। लेकिन अगर हवा तेज चल रही है और हमारी चमड़ी को स्पर्श करती हुई गुजरती है, तो वाष्पीकरण की गति अपनी प्रचंडता बनाये रखती है। तब इसके लिए अधिक ताप खर्च होता है, जो हमारे शरीर से ही लिया जाता है। इसलिए भी चलती हवा में हम स्थिर हवा के मुकाबले अधिक ठंड महसूस करते हैं।

वर्ष क्लत्स में कुवैत के अल खलीफा वंश ने वहां शासन करना प्रार[illegible]भ किया। तत्पश्चात यह तुर्की के अधीन रहा। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यह ब्रिटेन के संरक्षण में रहा। वर्ष क-ख्रक में स्वतंत्रता मिलने के बाद क-ख्रख में खलीफा बिन हमद का शासन प्रार[illegible]भ हुआ।

आधिकारिक नाम- दवलात कतर। **राजधानी**- दोहा।

मुद्रा- कतारी रियाल। **मानक समय**- जीएमटी से प घंटे आगे।

भाषा- अरबी (आधिकारिक), अंग्रेजी।

कुल जनसं[illegible]या- ख्.फ.क्म

क्षेत्रफल- क्क,क्क्ख वर्ग किलोमीटर।

स्थिति- मध्य पूर्वियां में फारस की खाड़ी और सऊदी अरब की सीमा पर स्थित है।

जलवायु- मरुस्थलीय है। मानचित्रानुसार समुद्री तट मूंगे की चट्टानों से यु[illegible]त है। मैदानी भाग रेतीला और बंजर है। **सर्वोच्च शिखर**- दुखान हाइट्ज-ख्प मीटर। **प्रमुख बड़े शहर**- दोहा, अल रयान, अल वक्रा।

निर्यात- पेट्रोलियम उत्पाद, उर्वरक, इस्पात।

आयात- उपभो[illegible]ता सामग्री, मशीनरी एवं संयंत्र, रसायन।

प्रमुख उद्योग- पेट्रोलियम उत्पाद, इस्पात, रसायन।

प्रमुख फसलें- खजूर, अनाज, चारा, ताड़, सि[illegible]जियां।

प्रमुख खनिज- तेल एवं प्राकृतिक गैस।

शासन प्रणाली- राजतंत्र। यहां शासन प्रमुख 'अमीर' होता है, जो स्वयं द्वारा नियु[illegible]त मंत्रिपरिषद् की सलाह से शासन करता है।

राष्ट्रीय ध्वज- मैहरून एवं सफेद रंग पर आधारित।

स्वतंत्रता दिवस- प सितंबर, क-ख्रक

प्रमुख धर्म- मुस्लिम।

प्रमुख हवाई अड्डा- दोहा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा।

प्रमुख बंदरगाह- दोहा, रास, लाफेन।

इंटरनेट कोड- .qa

तथ्य निराले

दक्षिण अफ्रीका के घने जंगलों में एक ऐसा पेड़ पाया जाता है जो स्वयं आग की लपटों जैसा जलने लगता है। इस वृक्ष की विशेषता यह है कि इसके फूल तेल फेंकने लगते हैं और तेल अपनेआप गैस बनकर जलने लगती है, जिसमें से हरे रंग की लपटें निकलती हैं।

कुछ बैक्टीरिया में भी प्रकाश संश्लेषण होता है, जैसे सोगेलियम, तोबोरिपिरालम आदि, क्योंकि इनमें क्लोरोफिल पाया जाता है।

दक्षिण अफ्रीका में एक और ऐसा वृक्ष है, जिसके तने से धुआं निकलता रहता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो वहां कोई बादलों का टुकड़ा हो।

मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य को माना जाता है।

ब्राजील, अर्जेंटीना और एशिया में सींग वाले मेढक भी पाए जाते हैं। इनकी खाल खुरदरी होती है और इनकी आंखों पर वो सींग होते हैं।

बुल मेढक की आवाज किसी बड़े जानवर जैसी होती है, लेकिन टाइगर मेढक ऐसे बोलता है, जैसे कोई कपड़ा फाड़ रहा हो।

वैसे तो मेढकों की औसत उम्र बारह वर्ष होती है। लेकिन डाइना नामक मेढक की उम्र 22 वर्ष आंकी गई है और क्लोड मेढक की 35 वर्ष।

सबसे अधिक तेयन क्षमता इक्स-रे की होती है।

नॉटिकल मील से समुद्री दूरी मापी जाती है। एक नॉटिकल मील 6080 फीट के बराबर होता है।

जलपोतों की गति नॉट में मापी जाती है। अगर कोई पोत पांच नॉट की गति से चल रहा है तो उसका मतलब वह एक घंटे में पांच नॉटिकल मील की दूरी तय करता है।

पॉलिग्राफ या लाई डिटेक्टर मशीन से आसानी से सच या झूठ का पता लगाया जा सकता है।

अफ्रीका में पाया जाने वाला नैंडूक एक ऐसा पौधा है जिसकी शक्ल आदमी से मिलती है। और इसे उखाड़ने पर बच्चे के रोने की आवाज आती है।

जिराफ जिन्दगी भर बोल नहीं पाता है, क्योंकि वह गूंगा जानवर होता है।

मच्छर अपने वजन से तीन गुना अधिक खून पी सकता है।

पेरू में एक ऐसा पेड़ है जिससे 20 गैलेन पानी प्रतिदिन टपकता है।

मनुष्य की एक आंख का भार 1.5 औंस होता है।

सऊदी अरब एक ऐसा देश है, जहां एक भी कैबी नहीं है।

फ्रांस की जलवायु ऐसी है, जहां मच्छरों का अकाल है।

कैनेडा के लोगों के अपने-अपने डाकटिकट हैं। वे चाहें तो अपनी फोटो लगा डाक टिकट भी लिफाफे पर चिपका सकते हैं।

विश्व की सबसे बड़ी ताजे पानी की झील सुपीरियर झील है।

तेन्दुआ एक ऐसा ताकतवर जानवर होता है जो लोहे की मोटी से मोटी सलाखें भी तोड़ सकता है।

गर्म स्थानों में उत्पन्न होने वाला समानी सामन, एक ऐसा पेड़ है, जो दिन में अपनी पत्तियों में पानी एकत्र कर लेता है, और रात को उसी पानी से बारिश कर देता है।

हर एक घंटे में हमारे शरीर में लगभग एक अरब कोशिकाएं मृत कोशिकाओं की जगह लेती रहती हैं।

केले के पेड़ में लकड़ी नहीं होती।

क्लोरोफिल के कारण पत्तियों का रंग हरा होता है।

उछलते हैं अनाज के दाने

पॉपकॉर्न बनाने के लिए मक्का या अन्य अनाज के दानों को उबौड़ी गरम तवे या सतह पर रखा जाता है, वे तड़-तड़तड़ उछलने लगते हैं। ऐसा करने से दानों के लिए उन पर दबाव रखा जाता है। आखिर ऐसा क्यों और कैसे होता है?

पॉपकॉर्न बनाने के लिए आमतौर पर जिस तरह के अनाज का इस्तेमाल किया जाता है, वे सख्त होते हैं। इनके बीच के हिस्से में दाना होता है, जिसके ऊपर कठोर स्टार्च की परत होती है। इसमें 10-15 प्रतिशत नमी भी होती है।

जब अनाज को भूना जाता है तो नमी पहले बिचाले हिस्से की नमी बर्फ होती है। बर्फ होकर यह वाष्प में बदल जाती है और फैलती है।

इसके फैलने से ऊपरी कठोर सतह पर दबाव पड़ता है और अनाज का दाना फट जाता है। यह वाष्प दाने के बिचाले हिस्से से एक झटके से निकलती है और न्यूटन के तीसरे नियम के अनुसार दाने को ऊपर उछाल देती है।

माचिस की डिबिया खाली या भरी

सामग्री– माचिस की भरी हुई डिबिया, पेट्रोलियम या मिट्टी-तेल, धागा।

यह तैयारी करो– सबसे पहले माचिस की सारी तीलियों को डिबिया से बाहर निकालकर इन्हें आधा-आधा काट लो। फिर तीलियों के उन टुकड़ों को, जिनके एक सिरा मसाला लगा है, आपस में एक-दूसरे से मिट्टी-तेल या पेट्रोलियम की मदद से चिपकाते जाओ। अब इस बाहरी को दिए के अनुसार माचिस की ट्रे में एक तरफ चिपकाकर, डिबिया को बंद कर दो। हां, एक बात का ध्यान रखना है कि इन टूटी तीलियों के साथ ही डिबिया के अंदर एक समूची तीली भी रखनी है।

शुरू करो– अपने दर्शकों के सामने पहले एक बार तो डिबिया खोलो, ताकि वे सब देख सकें कि डिबिया भरी हुई है। इसके लिए सावधानी की जरूरत बस इतनी ही है कि डिबिया को थोड़ा सी खोला जाये। फिर समूची तीली को डिबिया से निकालकर इसे बंद कर दो, और इस तीली को जादू के डंडे की तरह काम में लाते हुए डिबिया के चारों ओर घुमाओ। साथ ही सफाई से डिबिया की स्थिति अपने हाथ में सुपाच्य बदल लो।

अपने ही कि अब डिबिया को खोलने पर क्या होगा? दर्शक जब इस तरह डिबिया को खाली देखेंगे तो वे सब तुम्हारी जादूगरी का लोहा मान जाएंगे। इस खेल में बस एक बात का ही ध्यान रखना पड़ेगा तुम्हें, कि माचिस की डिबिया के ऊपर जो डिजाइन बना होता है वह इस तरह का हो, जिसके उल्टे-सीधे तरीके में कोई अंतर नजर न आये, बस बाकी का काम तो थोड़ा अभ्यास करके हाथ की सफाई बढ़ाने भर का है।

–जहान

CrossWord Puzzles

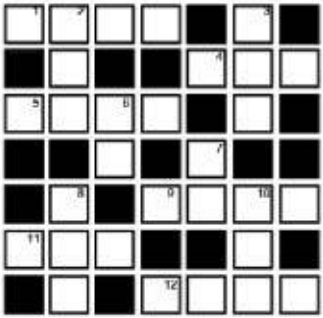

बाएं से दाएं

क. बाग, उद्यान, एक पुराना टीवी सीरियल है- 'गुल..., गुलफाम'(ङ)।

ख. दयनीय को यह भी कहते हैं (प)।

फ. अशुभ, अभागा, बुरा (क)।

–. हनुमान जी मूर्च्छित लक्ष्मण के लिए यह बूटी लाये थे (ङ)।

क्क. संसार, दुनिया, काल (प)।

क्ख. अंत तक साथ देने वाला मित्र (क)।

ऊपर से नीचे

ख. प्यारे-दुलारे बालक को यह भी कहते हैं (प)।

फ. हनुमान, एक कार कंपनी (प)।

ग. स्वर्ग की अप्सरा को यह भी कहेंगे (ख)।

ख. दांव, बारी (ख)।

च. पैदा करना या उपार्जन करना (प)।

ल. अस्तित्व, स□□ (प)।

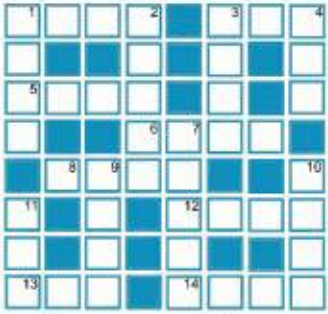

ACROSS

1. Lacking the power of hearing, Having impaired hearing (4).
4. Fuss, Bustle (3).
5.Facts and statistics collected together for analysis (4.)
6. A payment corresponding to a modern tax, rate or other assessed contribution (4).
8. Absolute uncontrolled rule is...cracy (4).
12. ...Bat means rope dancer or gymnast (4).
13. A higher degree than is desirable, permissible, or possible (3).
14. A device soundig a warning or other signal (4).

DOWN

1. A man who loves to wear fine clothes (4).
2. A large meal, typically a celebratory one (5).
3. In addition to, Likewise, Too (4).
4. The eyeball, A spherical objects or shape (3).
7. A comfortably equipped single-decker bus used for longer journeys (5).
9. A feature of a computer program that allows a user to reverse the last command executed (4).
10. Towards or in a lower place or state (4).
11. A habitual drunkard (3).

Answer

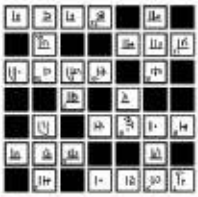

मन में जगी उमंग

अभी बड़ी सर्दी आयी
सबसे मन में उमंग जगायी।
जब तापे से कष्ट नहीं मिलेगा
हर दिल में उत्साह जगेगा।

बोला सूरज धीरे से आके
क्यों छुट्टी करते हो बाहर।
हम से बच के नहीं जा पाओगे
ठंड में मेरे ही शरण आओगे।

–धनश्याम शरण श्रीवास्तव, पिनौना (उ.प्र.)

बालमंच

आयुषि जैन
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

मोहम्मद हारून शेख
कुम्भारे, नांदेड़

पटहरा

दीवेश जैन
जयपुर

सबको सहलाती सर्दी

शीत ऋतु में आती सर्दी
सबको खूब सहलाती सर्दी।
कांप रहे हैं थली-मौहल्ले
सर्दी की फटकार से।
नरम पकौड़े हमें खिलाये
मां ने कितने प्यार से।
शीत लहर है खड़ी द्वार
कोई दरवाजा ना खोले।
सर्दी जब आती है
हमें बहुत कंपाती है।

–धीरज चौहान, मनसापुरी, दौसा (राज.)

लिटिल स्टार

फिल्म, सीरियल और रियेलिटी शोज़ शो के माध्यम से बाल कलाकार रोहन शाह लिटिल स्टार की हैसियत बनाने में सफल हो गया है। मूवी 'कृष-3' में बाल कलाकार के किरदार में वह प्रखर होकर उभरा है। वह कहता है, 'कृष-3 में अभिनय करना मेरे लिए नौरस की बात है क्योंकि यह राइटल जब नाराज़ीय सुपर हीरो के रूप में एक ब्रांड बन चुका है। मुझे खुशी है कि बॉलीवुड में मेरा नया किरदार उभर कर सबके सामने आया है।'

रोहन शाह को बचपन से ही फिल्म-मॉडलिंग का शौक रहा है। उसके घरवालों ने उसे एक्टिंग वर्कशॉप में भेजा। वहां से उसे मॉडलिंग के अवसर मिलने लगे। सर्वप्रथम वह कोलगेट की विज्ञापन फिल्म में सामने आया और उसे एक के बाद एक मॉडलिंग प्रस्ताव मिलने लगे। वह कहता है, 'मैं अब तक 250 विज्ञापनों फिल्मों में अनेक उत्पादों के लिए मॉडलिंग कर चुका हूं।'

रोहन शाह

छोटे पर्दे पर रोहन शाह का पदार्पण रियेलिटी शो 'बूगी-वूगी' में बतौर डांसर हुआ। वहां वह रूनी बर्वाक और उर्जा को प्रभावित करने में कामयाब रहा। उसके बाद डिज़नी चैनल के शो 'इशान' में मंझी के अहम रोल में सराहा गया।

सीरियल 'हमसे है लाइफ' ने उसे मौलल बनाकर पेश किया गया। इसी चैनल के लिए वह 'सुनराह' धारावाहिक में लम्बी भूमिका में वाह-वाही लूट सका। 'खड़े अच्छे लगते हैं', 'ये है आशिकी' उसके वर्णित सीरियल हैं, जिसमें वह केंद्रीय भूमिका में था।

रोहन शाह ने टीवी पर धूम मचाने के बाद फिल्मों की ओर अपने कदम बढ़ाये। फिल्म 'आओ विल करें' में वह इस नायक का बाल मित्र बनकर सिल्वर स्क्रीन पर छा गया। वह कहता है, 'आफताब स्वयं बाल कलाकार रहे हैं, इसलिए 'आओ विल करें' में मेरे बाल किरदार को पूरा-पूरा महत्व दिया। यह मेरे लिए बड़ा अवसर था। बॉलीवुड में इस फिल्म से मेरी पहचान बनी।

'तेरे मेरे सपने' 'मैंने गांधी को नहीं मारा' 'क्यों हो गया ना' फिल्मों से भी उसे काफी ख्याति मिली। 'कृष-3' के बाद तो उसके सितारे बुलंदी पर हैं। वह व्यस्त हो गया है। पढ़ाई में भी रोहन शाह बहुत अच्छा है। वह अपने शैक्षणिक संस्थान का प्रतिभावान छात्र है। वह शाकाहारी भोजन करता है। हरी सब्जी, फल व सलाद का शौकीन है। बाल पत्रिकाएं पढ़ना उसे अच्छा लगता है।

–राजू बाजरी रिवाज

शब्द युग्म

आमरण- मृत्यु तक
अधिधि- कानून विरुद्ध
अधि- मानसिक पीड़ा
आधी- आधा का स्त्रीलिंग
आजन- आकस्मिक
आपद- पैर तक
परिचारक- सेवक
प्रचारक- प्रचार करने वाला
आभरण- आभूषण, गहने
अवधी- हिन्दी की एक बोली

अनेकार्थक शब्द

दिन- दिवस, वासर, वार
छत्र- छाता, छतरी, आतपत्र
तरकश- तूणीर, तूणी, निषंग, तूण
झूठ- असत्य, मृषा, मिथ्या, अनृत
तांबा- ताम्र, ताम्रक, रीत धातु, ताम्रक
चन्दन- मलय, गंधसार, गंधराज, मंगल्य

एक ही सांचे में ढले हैं।
Cast in the same mould.
एक रंग की चिड़िया उड़ी।
Birds of a feather flock together.
एक परहेज सौ इलाज।
Diet cures more than doctors.
एक नजर सौ नसीहत।
Example is better than precept.
एक परहेज लाख दवा।
Temperature is the best physic.

In case of- अवस्था में
In any case- हर हालत में
If such be the case- यदि ऐसा हो
To put the cart before the horse- क्रम पलट देना

फरवरी-1 2014

अंतर है

Faint- फीका, मुरझाना
Feint- छल-कपट, दिखावा
Fair- गोरा, प्रदर्शनी
Fare- किराया
Feast- दावत, पौष्टिभोज
Fist- मुट्ठी

एक के तीन

Short wave-शार्टवेव -शार्टवेव -ह्रस्व तरंग
Microphone-माइक्रोफोन -माइक -ध्वनि प्रसारकम्
Loud speaker-लाउड स्पीकर -भीपू -ध्वनि विस्तारम्
Medium wave-मीडियम वेव -मीडियम वेव -मध्यतरंग
F.M.Channel-एफ.एम. चैनल- तरंगआप प्रवाहिका, एफ.एम. प्रणालिका

मुहावरे

चोर से कहे चोरी कर शाह से कह जागता रह
दोनों विरोधी पक्षों से संपर्क रखने की चालाकी।
छछूंदर के सर में चमेली का तेल

उर्दू/ हिन्दी

कुनर्क- दास, नौकर, दासी
कुफ्रान- कृतघ्नता, एहसान-फरामोशी
कुफ्र- अस्वीकृति, अकृतज्ञता, कृघ्नता
कुर्क- निषिद्ध, मना किया हुआ, वर्जित
कुर्नास- पिशाच, राक्षस, पहाड़ की चोटी

One Word

Gratis- Without payment.
Glutton- One who eats too much.
Matinee- A cinema show which is held in the afternoon.

प्रस्तुति: विजय शर्मा

- जानने की इच्छा - जिज्ञासा।
- जो पीने योग्य न हो - अपेय।
- जो भोजन रोगी के लिए निषिद्ध है - अपथ्य।

art junction

कटवर्क कार्ड

सामग्री

ड्रॉइंगशीट, हैंड मेड शीट (रंगीन)
कैंची, फेविकोल, पोस्टर कलर।

विधि

ड्रॉइंगशीट पर कोई भी आकृति बना लें। फूल, तितली या अन्य कोई। कैंची या कटर की सहायता से उसे सावधानी से कट करके निकाल लें। शीट पर रंग करके सूखने के बाद कट करके निकाली हुई आकृति को ऊपर चिपका दें। अंदर वाली शीट पर दूसरा रंग कर दें।
इसी तरह आप बॉर्डर भी बना सकते हैं। साथ ही मनचाहा आकार देकर और रंग भर सकते हैं।

पेपर फ्लॉवर

सामग्री

ड्रॉइंगशीट, पोस्टर कलर, कैंची, फेविकोल।

विधि

ड्रॉइंगशीट से अंडाकार शेप के फूल की पत्तियां काट लें। सब पत्तियों को लम्बाई में मोड़ लें। फिर सभी पत्तियों को बीच में से मोड़ कर एक-दूसरे से चिपकाते जाइए। इसी तरह जितने पत्ती के फूल बनाने हों उतनी पत्तियां चिपका दें। बीच में एक गोला काट कर चिपका दें। ताकि पत्तियों का जोड़ नहीं दिखे। इन फूलों को कार्ड पर भी चिपका सकते हैं, या कागज के बैग पर भी डिजाइन बना सकते हैं।

A. इसमें छिपी इन वस्तुओं को ढूंढो।

उत्तर

B. पेड़ पर कितने फूल हैं।

उत्तर

C. चिड़िया की असली शेडो कौनसी है?

D. किस तितली का कौनसा फूल?

E. सवालों के उत्तर के आधार पर रंग करो।

पजल्स

F. डॉट टू डॉट

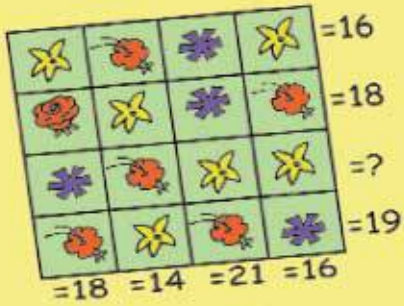

H. किस फूल के कितने नम्बर हैं? प्रश्नवाचक स्थान पर वहां का नम्बर लिखो।

Ans:16(=5, =2, =7, =4)

G. अंतर बताओ।

उत्तर

1. लड़की का दस्ताना
2. लड़की के दिमाग की बत्ती 4. बगुले की पूंछ
5. हाथी की सूंड
6. पूंछ की संख्या
7. जराफे की गर्दन के पैर 8. दिमाग की पूंछ 9. पंख की संख्या
10. हाथी की आंख

I. स्टेप बाइ स्टेप फूल बनाओ।

Kids Club

अशोक नैप
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-पीपराली, गुड़ामालानी
रुचि-पढ़ना, टी.वी.।

मो. चांद अंसारी
उम्र- 10 वर्ष
स्थान- अजमेर (राज.)
रुचि- पढ़ना, सेवा।

भूराराम सारण
उम्र- 10 वर्ष
स्थान- धनाऊ
रुचि-पढ़ना, खेलना।

सरफराज
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-सांचौर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

नाजमा खातून
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-हसपुरा,
औरंगाबाद

लक्ष्य त्रिवेदी
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-पाली (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

ममता सैनी
उम्र- 10 वर्ष
स्थान- भाखण्ड कला, सीकर
रुचि- पढ़ना, खेलना।

दिनेश खोरवाल
उम्र- 10 वर्ष
स्थान- सांचौर (राज.)
रुचि-खाना, पढ़ना।

संकेत कुलदीप
उम्र- 8 वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-डांसिंग, पढ़ना।

मो. बकार
उम्र- 8 वर्ष
स्थान-कोटा (राज.)
रुचि-पढ़ना, ड्राइंग।

अनवार अहमद
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-बिजौलियां (राज.)
रुचि-क्रिकेट, ड्राइंग।

दिनेश कुमार बिश्नोई
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

प्रियांशु सैनी
उम्र- 10 वर्ष
स्थान- बूंदी (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

मो. एहसान
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-नवादा (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

योगेश कुमार
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-सांचौर (राज.)
रुचि-पढ़ना, टी.वी.।

अमित यादव
उम्र- 10 वर्ष
स्थान- गौरामाफी
(उ.प्र.)

निलाक्षा कुलदीप
उम्र- - वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-क□प्यूटिंग, कार्टिंग।

नूरजहाँ
उम्र- - वर्ष
स्थान- अजमेर (राज.)
रुचि-पेंटिंग, पढ़ना।

क्रिश गेल
उम्र- छः वर्ष
स्थान- सांचौर (राज.)
रुचि-पढ़ना, टी.वी.।

प्रकाश सोयल
उम्र- छः वर्ष
स्थान-आलमसर, चौहटन
रुचि-पढ़ना, टी.वी.।

मुनीश्वरी डोगरा
उम्र- छः वर्ष
स्थान-दिल्ली
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

मो. शहबाज आलम
उम्र- छः वर्ष
स्थान-नरहन (बिहार)
रुचि-पढ़ना, रेसिंग।

सहर अजम
उम्र- छः वर्ष
स्थान-भानतलैया (म.प्र.)
रुचि-पेंटिंग, पढ़ना।

अलदीक पारीक
उम्र- छः वर्ष
स्थान-सांचौर (राज.)
रुचि-खेलना, टी.वी.।

रुचि विजयवर्गीय
उम्र- छः वर्ष
स्थान-किशनगढ़ (राज.)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

राकेश पटेल
उम्र- छः वर्ष
स्थान-बड़वानी (म.प्र.)
रुचि-मार्शल आर्ट, डांस।

प्रभात कुमार
उम्र- छः वर्ष
स्थान- बैरवा, मधुबनी (बिहार)
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

नीरज कुमार यादव
उम्र- छः वर्ष
स्थान-खजुरी, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, कॉमेडी।

इंद्रा पन्नू
उम्र- - वर्ष
स्थान-कालस, बाड़मेर (राज.)
रुचि- पढ़ना, टी.वी.।

पूजा सैनी
उम्र- छः वर्ष
स्थान-मालपुरकलां (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

मो. महबूब आलम
उम्र- छः वर्ष
स्थान-नरहन, समस्तीपुर
रुचि-पढ़ना, खेलना।

अजय
उम्र- छः वर्ष
स्थान-मावण्ड कलां,
सीकर

भूमध्य रेखा (इक्वेटर)

भूगोल में भूमध्य रेखा वह काल्पनिक रेखा है जो उ□र और दक्षिण ध्रुव के बीच पृथ्वी का च□कर काटती है। भूमध्य रेखा हमारे ग्रह का एक अद्भुत क्षेत्र है। यह मानव गरीबी और प्राकृतिक-जैव विविधता का दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संकेंद्रण है। भूमध्य रेखा पर सूर्य की झुलसाने वाली गर्मी के नीचे स्वर्ग से समुद्री तट, अजीब खाद्य-पदार्थ और अनोखे वन्यजीव हैं। साथ ही दुनिया के चरम इलाके भी हैं। घने वर्षा-वन, ऊंचे ज्वालामुखी और खतरनाक नदी के उतार हैं। भूमध्य रेखा धरती का सिर्फ पांच प्रतिशत भाग है। लेकिन यह पृथ्वी के ५ प्रतिशत जीवों और पौधों का घर है।

सूर्य, प्रकाश और जीवन का दाता है। वह भूमध्य रेखा पर सबसे श□तिशाली होकर चमकता है। यही कारण है कि भूमध्य रेखा जीवन का असाधारण स□पन्न क्षेत्र है। न□शे पर एक काल्पनिक रेखा से बढ़कर भूमध्य रेखा प्रकृति का श□तिशाली बल है। गैलापागोस द्वीप भूमध्य रेखा पर है, लेकिन वह उष्णकटिबंधीय स्वर्ग नहीं है। प्रशांत महासागर भाग्य और अकाल दोनों लाता है। गैलापागोस द्वीप पर समुद्र ने एक अजीब और असंभव दायरा पैदा किया है।

समुद्री धाराएं

समुद्र को बल भूमध्यरेखीय सूर्य से मिलता है। यह समुद्री धाराओं को गति देता है जो खाद्य और खनिज द्वीपों तक लाती हैं, जिससे कई जीव पलते हैं। भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर पर बेहद श□तिशाली सूर्य सतह के पानी को प□ठियो सेल्सियस तक तपाता है। गर्म, नम हवा इतनी अधिक मात्रा में बनती है कि भूमध्य रेखा अंतरिक्ष से उबलते बादल की रेखा के रूप में दिखती है। सतह के नीचे बह रही ठंडी हवा पृथ्वी के चक्रण से पश्चिम की ओर घूमती है। ये हवाएं भूमध्य रेखा से टकराकर आंधी, बिजली और भारी बारिश पैदा करते हैं। पालमायरा एटोल भूमध्य रेखा पर स्थित द्वीपों का समूह है। वह गैलापागोस द्वीपों से पूरी तरह अलग है, लेकिन दोनों पर जीवन समुद्री धाराओं के बल से निर्धारित होता है।

भूमध्यरेखीय आकाश

समुद्री पक्षियों की लगभग प प्रजातियां पालमायरा एटोल के घरौंदे में पायी जाती हैं। भूमध्यरेखीय प्रशांत के द्वीपों पर कुछ ही द्वीप हैं जहां समुद्री पक्षी अपने अंडे देते हैं।

लाल टांगों वाला बूबी घोंसले के लिए लंबे पेड़ों का सहारा लेता है। अपने भूखे चूजे के लिए खाना ढूंढने के लिए वह दूर समुद्र में उड़ती मछलियां ढूंढता है।

हल्के शरीर और दो मीटर में फैलने वाले पंख के साथ बीच हवा में बूबी की चोंच से छड़ी चुराने में सक्षम हवाई ठग है, फ्रीगेट बर्ड। इस पक्षी की सफलता बूबी के भाग्य पर निर्भर करती है। इसलिए दोनों का प्रजनन का समय एक है। यूं तो एलबेट्रास ठंडी जलवायु का पक्षी है। गैलापागोस द्वीप सिर्फ उष्णकटिबंधीय प्रजाति तरंगमय एलबेट्रास का घर है। फ्रीगेट बर्ड, एलबेट्रास सिर्फ एक अंडा देता है। इसके लिए एक

प्रवाल भित्तियां और मछली

प्रवाल भि□ियां विशाल बगीचे की तरह दिखता है। लेकिन यह लाखों छोटे जानवरों से मिलकर बना होता है। हर भि□ी बहती धाराओं से खाना छनने वाले जंतु की बस्ती है।

भि□ी जंतु का असली रहस्त उसके टिशू में मौजूद सूक्ष्म बगीचे हैं। लाखो जूजानेथेले, सूक्ष्म एल्गे, अपने लिए और अपने मेजबान भि□ी के लिए प्रकाश संश्लेषण के जरिए खाना बनाते हैं। ये भूमध्यरेखीय सूर्य की शक्ति का दोहन करते हैं। पौधों, जीवों और सूर्य के बीच इस अविश्वसनीय संबंध ने बड़े भि□ी किले का निर्माण किया है। खजूर का पौधा मछलियों की सैकड़ों प्रजातियों का घर है। यहां तितली की कई प्रजातियां रहती

पृथ्वी के इन विषम इलाकों और विविध क्षेत्रों के बारे में जानने के लिए एनीमल प्लेनेट पर हर रात ८ बजे देखें- प्लेनेट आवर।

पिछली बार की क्विज- उस न उड़ने वाले पक्षी का नाम बताएं जो आकार में सबसे बड़ा होता है, का सही जवाब है - शुतुरमुर्ग

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी कम्यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही पंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई पंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

दिसम्बर द्वितीय, 2013

क. रविन्द्र प्रकाश शर्मा, मनोहरपुर, जयपुर
ख. मनमेश शर्मा, कोटा (राज.)
प. शिवम मोदनवाल, सैदपुर, गाजीपुर
द. मोनालिसा राय, इलाहाबाद (यूपी)
य. प्रतिभा शौर्य, बीकानेर (राज.)
र. उमेश स्वर्णकार, उदयपुर (राज.)
ल. रिद्धि गर्ग, उदयपुर (राज.)
व. रचित बागरेचा, अहमदाबाद (गुजरात)
-. राखी मीणा, जोधपुर (राज.)
क. अंशुल मिश्र, नरहरपुर, सेमरी पुरबोलिपुर (उ.प्र.)

(विजेताओं को घर पर स्वयं पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

सराहनीय प्रयास

क. मनु कुमार, पिपो, भोजपुर (बिहार)
ख. अंकित गुप्ता, श्रीगंगानगर (राज.)
प. आईना चौधरी, पलोदा (राज.)
द. शौरभ कुमार, पटना (बिहार)
य. सुभद्रा महावर, कोटा (राज.)
र. कीर्तन लोहिया, नागौर (राज.)
ल. गजेन्द्र कुमार, सासेकगंज (बिहार)
व. लक्ष्मी कंसारा, जोधपुर (राज.)
-. मनवेन्द्र सिंह, मण्डोर, जोधपुर (राज.)
क. खुशबू सैम्यल, धार (म.प्र.)
ख. राजेश जैन, भीलवाड़ा (राज.)
प. एकता सिंह, जयपुर (राज.)
द. जयुति साहू, सकरी, (छत्तीसगढ़)
य. कामरान नियार, अलीगढ़ (उ.प्र.)
र. बबा चौधरी, सीमाधोपुर (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 340 का परिणाम

क. कु. सामिया खान, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)
ख. भरत सोलंकी, बाड़मेर (राज.)
प. आयुष दीक्षित, बड़ोदरा (गुजरात)
द. रीतेश, लालबाग, दरभंगा (बिहार)
य. पुलकित शर्मा, जयपुर (राज.)
र. अभिषेक सिंह, हापुड़ (उ.प्र.)
ल. निकुंज पारीक, लक्ष्मणगढ़, सीकर (राज.)
व. अंशु शर्मा, डिडवाना, अलवर (राज.)
-. नुपुर दास, धुर्वा, रांची (झारखंड)
क. बाँबी, बिजनौर (उ.प्र.)

जून प्रतियोगिता- 340 का सही उत्तर

साईं बाबा, ईसामसीह, गुरुनानक देव
द. लेखन
ख. अंग्रेजी
प. एडम बेल ने
द. गायन
य. विटामिन डी

(विजेताओं को घर-घर स्वयं पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

ज्ञान प्रतियोगिता

343

क. च वर्ग का अंतिम अक्षर होता है ?
(अ) ण
(ब) ञ
(स) न

ख. ङ अक्षर हिन्दी वर्ण माला में किस वर्ग में आता है ?
(अ) ट वर्ग
(ब) च वर्ग
(स) क वर्ग

घ. कमल का पर्यायवाची शब्द है ?
(अ) जलज
(ब) नीरद
(स) पयोद

ङ. निम्नलिखित में से कौनसा शब्द सही है ?
(अ) सन्यास
(ब) संन्यास
(स) सनयास

च. अंग्रेजी वर्ण माला में (A,E,I,O,U) को कहा जाता है ?
(अ) व्यंजन
(ब) स्वर
(स) ह्रस्व

चित्रों में दिख रहे फूलों को पहचानिये।

.....
.....
.....
...

.....
.....
.....
...

ज्ञान प्रतियोगिता– 343

नाम.....
पता.....
.....पोस्ट.....
जिला.....
राज्य.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

जबकि उत्तर प्रतियोगी को क-ख-ग सह (प्रत्येक की भी समय) भेजे जाएंगे।

उत्तर पता: बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

बोलो, हम चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को कलरफुल (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना रूपकलिका क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 5 फरवरी, 2014 तक भिजवाना है। उम्मीद आपकी उम्र 15 वर्ष या हमसे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

ढूंढो तो...

नीचे दी गई आकृतियों को ऊपर वाले चित्र में ढूंढना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

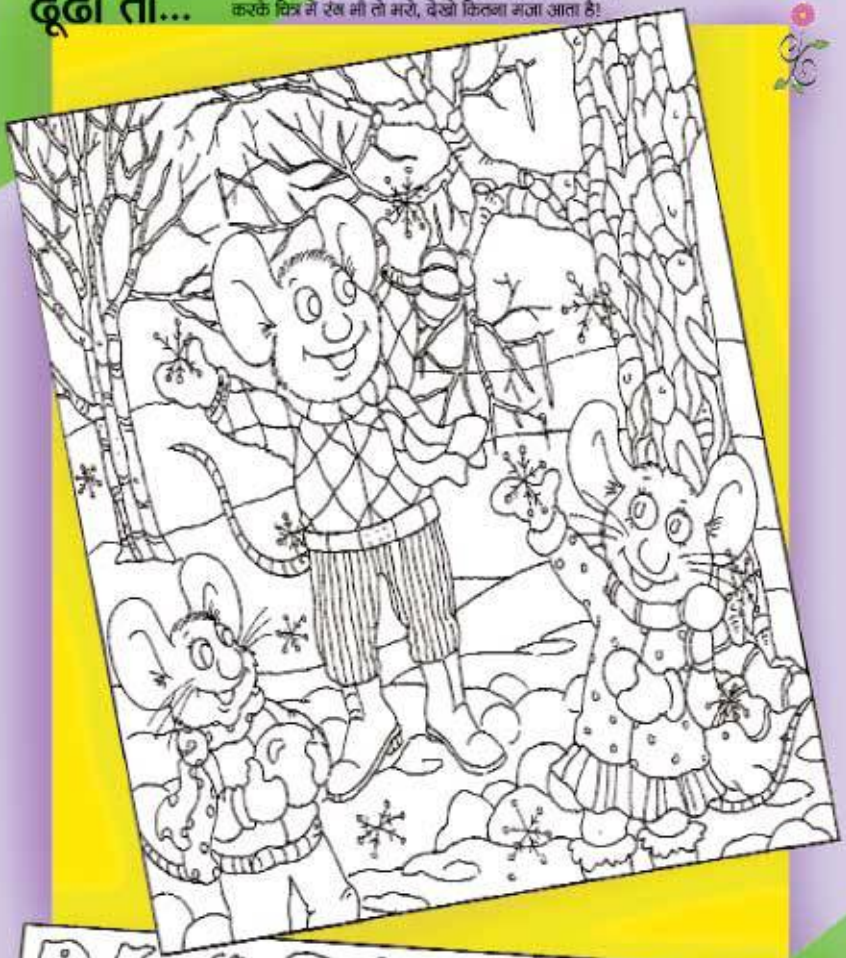

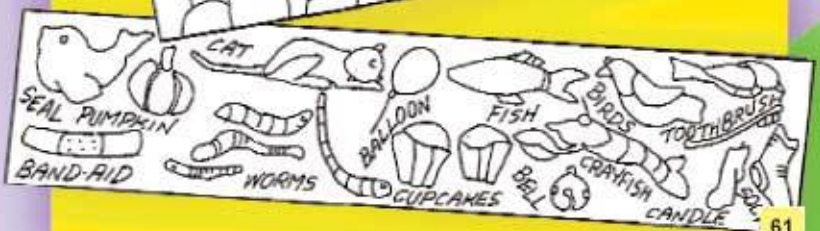

ई-मैन - 13

प्रस्तुति: उन्नी कृष्णन रिंडनकुर

हमें यह सब सिद्ध करना है।
सर, जहां बोट थी, वहां से अमस्टर किनारा कुछ ही दूरी पर था।
हा...हा...अमस्टर का किनारा! वह तो बुरी आत्माओं का निवास है।
मैं तुम्हें उनके बारे में बताना भूल गया था।
कई शताब्दियों पूर्व वहां समुद्री डाकुओं साम्राज्य था।

लेकिन आठवीं शताब्दी के अंत तक उनका पूरी तरह विनाश कर दिया गया था।
समुद्री डाकू! तुम उन्हीं को तो अपना मेला कह रहे थे।
हमारे पुस्तकालय में समुद्री डाकुओं से जुड़ी कहानियों की कई पुस्तकें हैं।
अच्छा!
क्या मैं उनको पढ़ सकता हूं?
कल मेरे ऑफिस में मिलो।
ध्यान से रखना। समुद्री डाकुओं से जुड़ी हुई ये अंतिम किताबें रिकार्ड में हैं।
अगले दिन...
धन्यवाद।

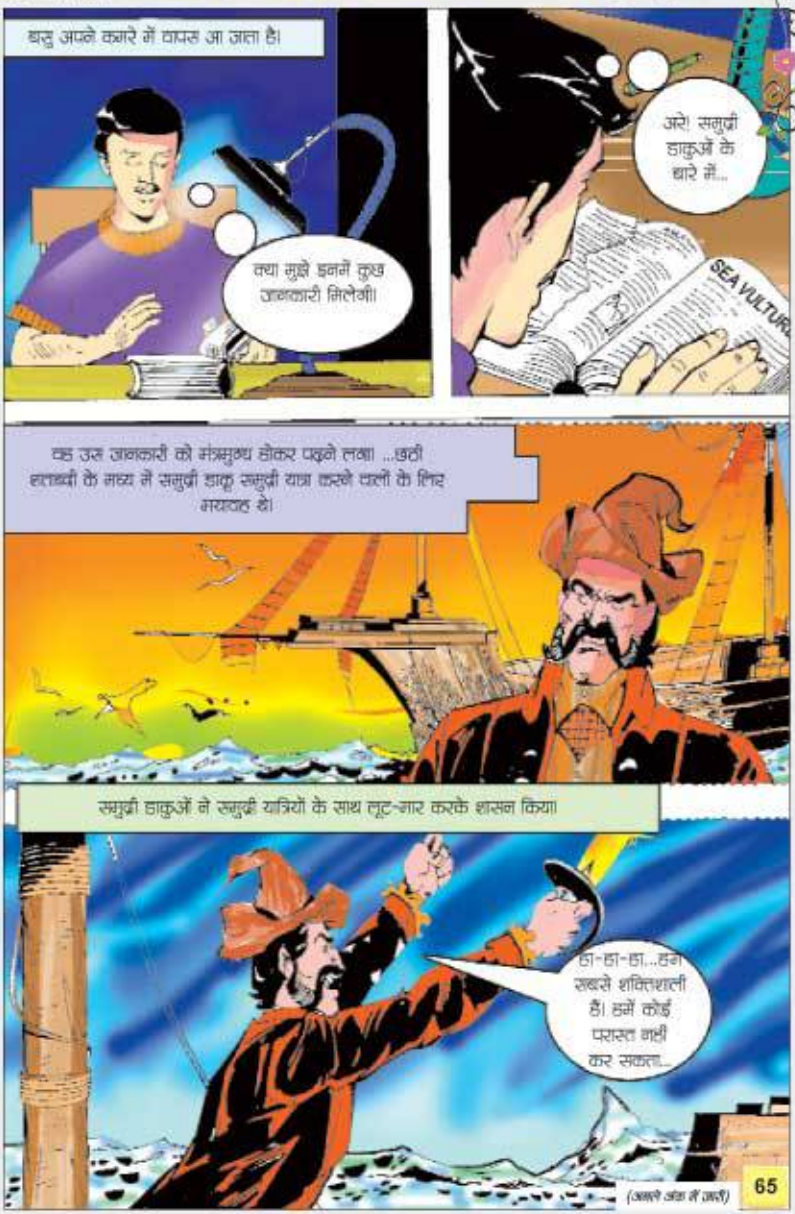
बसु अपने कमरे में वापस आ जाता है।
क्या मुझे इनमें कुछ जानकारी मिलेगी।
अरे! समुद्री डाकुओं के बारे में...
SEA VULTURE
वह उस जानकारी को मंत्रमुग्ध होकर पढ़ने लगा। ...छठी शताब्दी के मध्य में समुद्री डाकू समुद्री यात्रा करने वालों के लिए भयावह थे।
समुद्री डाकुओं ने समुद्री यात्रियों के साथ लूट-मार करके शासन किया।
हा-हा-हा...हम सबसे शक्तिशाली हैं। हमें कोई परास्त नहीं कर सकता...

(अगले अंक में जारी)

मैं बालहंस को विगत कई वर्षों से पढ़ रही हूं। यह पूर्णतया रोचक और ज्ञानवर्द्धक मैगजीन है। मुझे इसके हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है। मेरे ज्ञान को बढ़ाने में यह महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। मैं जब से बालहंस खरीद रही हूं, तब से लेकर अब तक के सभी अंक मेरे पास रखे हैं। इस अंक में नए साल का संकल्प, अपने अपने काम, होल ने खोली पोल कहानियां रोचक लगीं। चित्रकथा नकली गुफा-असली गुफा, अपनी अपनी बुद्धि मनोरंजक थी। नई प्रतियोगिताएं शुरू करें।

- रागिनी देवी निमग,
कालपुर नगर (राज.)

बालहंस हमें देती खुशियां अपार
हमारे लिए जानकारियों का भंडार।
हमेशा पढ़ते रहेंगे बालहंस
कभी न करेंगे इसे मिस।
प्रतियोगिता आती है रंग भरो
कहती है कुछ तो प्रयत्न करो।

जनवरी प्रथम, अंक

कैसा लगा

बालहंस की सोंध सुहानी
याद दिलाती है नानी की कहानी।
बिन्दु से बिन्दु अन्तर बाढ़ो
दिमाग को कसरत कराओ।

- दिव्या गौड़,
अलवर (राज.)

I have been reading Balhans for five years. All of my family members read and enjoy Balhans. I like its stories, jokes, art and craft, learn english and knowledge bank. It is the magazine of entertainment with knowledge.

-Pradeep Jeph,
Babai, Jhunjhunu (Raj.)

इनके पत्र भी मिले

- **देवेन्द्र सूथार**, धानरा, जालोर
- **खजर अलम**, धानखलेया, जबलपुर
- **खुशी-देशना पटनी**, डुमरांतलैया
- **वसुन्धरा प्रजापत**, नागावपुर
- **अमृता पाण्डेय**, दिल्ली
- **मो. बकर**, मेरठ
- **खजर अलम**, जबलपुर
- **रितेश कुमार**, नवाबगंज
- **अमृता पांडेय**, दिल्ली
- **शुभेष कुमार झा**, पलामू
- **सुरेश बुन्देल**, सोक
- **विकास खटीकेरिया**, खरसाडी
- **पूजा नेहरा**, गोलधाना, नोहर
- **प्रवीण कुमार शाह**, भवानीपुर, सुपौल
- **अदिति वैस**, कुतुबपुर, कन्नौज
- **मनोज बारफल**, हरनी, जालोर
- **मुलराम रिवाड**, छपरीखुर्द, चमोर
- **प्रियम**, छपरी खुर्द, नागौर

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से बालहंस, जयपुर के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-
बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोट: बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेज जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

राजभाषाभारती राजभाषा पत्रिका द्वारा मेसर्स लिथोटेक के लिए मुद्रक व प्रकाशक: सुरभित सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जेएलएन मार्ग-2-ई, प्रताप सांस्कृतिक केंद्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पेज नं. 13-14, प्रेस सांस्कृतिक केंद्र, प्रतापगढ़, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादक: आनन्द प्रकाश पांडे

आपने सुनेला अपने राष्ट्रपति पारले ग्लूकोज़ बिस्किट्स की मुख बढ़ाए का गया लिया है. और अब, नया और बेहतर पारले ग्लूकोज़ बन गया है ज्यादा बड़ा और ज्यादा क्रीमी. रायाचिष्ट क्रीम से भरपूर, ये अब है पहले से भी ज्यादा टेस्टी. मुंह में पानी लाते बेहद रायाचिष्ट यह बिस्किट एनालब्ध है चार फ्लेवर्स में, जो हैं कुछ ज्यादा ही मज़ेदार.

MRP Rs.5/- INCL. OF ALL TAXES FOR NET WEIGHT 50g=Rs.3.1/g (EXCHA Rs.3/g.
KREAMS CHOCOLATE *MRP Rs.5/- INCL. OF ALL TAXES FOR NET WEIGHT 37.3g. OFFER VALID TILL STOCK LASTS.